भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 | **नवम्बर** 2009 | **अंक** 11

पुस्तक महात्म्य

ग्रन्थों में उपलब्ध है, अतुल ज्ञान भण्डार।
अध्ययन व उपयोग से, आता नया निखार॥
ग्रन्थों के आलोक में, चिन्तन से उत्कर्ष।
जीवन भर पढ़ते रहें, सद्साहित्य सहर्ष॥
सुखद सदा हैं पुस्तकें, बनता मानव नेक।
अन्तस तम जाता रहे, जागे विमल विवेक॥
उपयोगी हैं पुस्तकें, देतीं उच्च विचार।
दिशा बोध के साथ ही, रहते नहीं विकार॥
जीवन के अनुभव गहन, अन्तस के उद्गार।
बहुआयामी ग्रन्थ हैं, शोधों का विस्तार॥
ग्रन्थ ज्ञान के स्रोत हैं, चिंतन के सोपान।
है समाज का आइना, सद्भावों के गान॥
उत्पीड़न का दंश है, शोषित की आवाज।
पुस्तक जन मन चेतना, निधि है सकल समाज॥
प्रेरक बनती पुस्तकें, जीवन के प्रतिमान।
यही समाज की आत्मा, मानव की पहिचान॥

—कैलाश त्रिपाठी
अजीतमल (औरैया)

लेखन तपस्या है

देह गला के
मोमबत्ती लिखती
काव्य ज्योति की।

रचनाएँ तो
जैसी तैसी, जिल्द है
किन्तु कीमती।

बीजमंत्र है
निष्ठा, साहित्य काव्य
और कला का।

जन-संख्या से
अधिक, बढ़ रही
पुस्तक-संख्या।

पढ़ते कहाँ
लोग पुस्तक ? चाट
रही दीमक।

—नलिनीकान्त
अंडाल, पं० बंगाल

प्रेम-पंथ दुर्गम अति, चलना खाँड़े की धार!

स्वयं-निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए, आत्मिक 'श्रेय' अथवा लौकिक 'प्रेय' को पाने के लिए खाँड़े की धार पर चलना ही होगा। तलवार की तीक्ष्ण-धार पर चलने का सन्तुलन रखकर, साधना की आग में तपते हुए ही लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है। इस प्रक्रिया में अपने-आप समर्पित हो जाता है सब कुछ, साध्य में ही विलीन हो जाता है साधक का स्वत्व-मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार। साधना के दुर्गम-पथ से गुज़रते हुए अतीत और वर्तमान के साधकों ने ज्ञान-विज्ञान के सूत्रों का संधान किया है, आविष्कार किये हैं और आज भी जारी है यह साधना।

ज्ञान-विज्ञान की इस तप:साधना के क्षेत्र में कोई 'शार्टकट' नहीं है। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए जिस संकल्प और साधना की ज़रूरत है उसके संस्कार-बीज बचपन में ही पड़ जाते हैं। प्राथमिक-कक्षाओं में ही जिज्ञासु बाल-मन की कल्पनाएँ पंख खोलती हैं और उन्मुक्त आकाश के अलग-अलग क्षितिजों को पार करते हुए, अध्ययन-मनन, अभ्यास-प्रयोग और अनुसन्धान करते हुए बालक युवा हो जाते हैं और आरम्भ होता है साधना का दूसरा चरण। यहाँ भी कोई 'शार्ट-कट' नहीं है जिसे विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत लोग अच्छी तरह जानते हैं। किन्तु पिछले दो-तीन दशकों से व्यावहारिक तौर पर 'शार्ट कट' का ही बोलबाला देखा जा रहा है। साधना और योग्यता को धकेलकर चरण-चुम्बकों ने सिद्धि हासिल कर ली है और क्रमश: चारों ओर अपनी गोटियाँ बिठा दी हैं। किन्तु विद्या के क्षेत्र में यह माफियागिरी ज़्यादा नहीं चल सकती क्योंकि बिना तपस्या के सिद्धि पाने की कोशिश अध:पतन की ओर ले जाती है। इन तथ्यों पर गौर करते हुए केन्द्रीय मानव-संसाधन मंत्रालय के अन्तर्गत सभी शैक्षणिक आयोगों, परिषदों ने व्यापक-सुधार हेतु परिवर्तित पाठ्यक्रमों के साथ दिशा-निर्देश भी लागू किये हैं। वस्तुत: आवश्यकता है प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के बीज-परक शिक्षण-प्रशिक्षण को परम्परित संस्कारों के साथ अंकुरित-पल्लवित करने की, जिससे विद्यार्थी-बालक का सु-संस्कृत विकास हो सके। जीवन के सभी क्षेत्रों में—चाहे वह शिक्षा हो, साहित्य-कला-संस्कृति हो, वैज्ञानिक-अनुसन्धान, आविष्कार हो, वाणिज्य-व्यापार हो; कहीं भी 'शार्ट कट' नहीं है सर्वत्र साधना है, तपस्या है। ज्ञान-साधना के इस बिन्दु पर भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाएँ भी नहीं रहतीं केवल सार्वभौम साधना चलती रहती है जिसका साध्य होता है नित्य-नूतन ज्ञान-विज्ञान।

'शार्टकट' की विडम्बना की तरह सतत-साधना का व्यवधान बन जाती है हमारी अवकाश-प्रियता। यद्यपि आरम्भ से ही हमारी संस्कृति साधनापरक होने के साथ उत्सव-परक भी रही है। किन्तु जीवन के प्रत्येक चरण को उत्सव-परक बनाने के बावजूद हमारी संस्कृति अवकाश-परक नहीं रही जैसी आज़ादी के बाद से विकसित सरकारी कार्यप्रणाली में दिखलायी दे रही है। सामान्य तीज-त्यौहारों के अवकाश के अलावा राजनीतिक दबाव से हमारे लोकतंत्र के विभिन्न गणों, जातियों, धर्म-सम्प्रदायों आदि समूहों ने अपनी परम्पराओं और महापुरुषों के नाम पर 'राष्ट्रीय अवकाश' घोषित

शेष पृष्ठ 2 पर

स्मरण

पत्रकारिता के पुरोधा पत्रकार बालमुकुंद गुप्त

हिन्दी पत्रकारिता इतिहास के प्रमुख स्तम्भ बाबू बालमुकुंद गुप्त का जन्म **14 नवम्बर 1865** को रोहतक के गुडियानी गाँव में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू और फारसी में हुई थी। तत्पश्चात् पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की।

गुप्तजी मूलत: उर्दू के पत्रकार थे परन्तु बाद में वह हिन्दी क्षेत्र में आ गये। उन्होंने रोहतक के 'रिफाहे आम' और मथुरा के 'मथुरा समाचार' उर्दू मासिक पत्रों में सहयोगी सम्पादक के रूप में तथा 1886 में चुनार के अखाबर 'अखबारे चुनार' में सम्पादक के रूप में कार्य किया। लाहौर के उर्दू पत्र 'कोहेनूर' का भी आपने सम्पादन किया था। आपका महामना पं० मदनमोहन मालवीय, पं० प्रतापनारायण मिश्र, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी प्रभृति श्रेष्ठ हिन्दी मनीषियों से निरन्तर सम्पर्क बना रहा। फलत: दैनिक हिन्दोस्थान, भारत प्रताप, हिन्दी बंगवासी आदि पत्रों का सम्पादन कार्य भी सहर्ष वहन किया। वे सन् 1899 में 'भारत मित्र' कलकत्ता के सम्पादक भी रहे। वस्तुत: गुप्तजी की प्रखर लेखनी भाषा, साहित्य और राजनीति की जीवंत मिसाल है। इनकी सरल-सुबोध लेखन शैली अपने कटाक्ष के कारण मर्मस्पर्शी होती थी। इनके निबन्धों में राष्ट्रप्रेम और सामाजिक नव-निर्माण का नव जागरण सहज ही देखा जा सकता है। 'बालमुकुंद गुप्त निबन्धावली' ग्रन्थ इस बात का ज्वलंत प्रमाण है। पत्रकारिता के माध्यम से जन-जागृति कर राष्ट्र को मुख्य धारा से जोड़ने में गुप्तजी का अवदान अविस्मरणीय है।

हरिवंश राय 'बच्चन'

आधुनिक हिन्दी कविता के शलाका पुरुष डॉ० हरिवंश राय बच्चन का जन्म **27 नवम्बर 1907** को प्रयाग के पास अमोढ़ा गाँव में हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रयाग में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद और वाराणसी में हुई। वह 1941 से 1952 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे। 1952-1954 में डब्ल्यू०बी०यीट्स पर शोध कार्य करके कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड से पी०एचडी० की उपाधि प्राप्त की। भारत वापस आने के बाद उन्होंने आकाशवाणी इलाहाबाद में काम किया। बाद में 16 वर्षों तक दिल्ली रहे और दो वर्ष तक विदेश मन्त्रालय में हिन्दी अधिकारी पद पर आसीन हुए। बच्चन जी राज्य सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुए थे। उन्होंने भारतीय जन-जीवन से जुड़कर गीतों की रचना की और फिल्मों के लिए भी गीत लिखे। साहित्य की सभी विधाओं में बच्चनजी का योगदान अप्रतिम रहा है। उन्हें हिन्दी का उमर खैयाम कहा जाता है। वे छायावाद और प्रगतिवाद के प्रमुख स्तम्भ हैं। उन्होंने अपने बहुआयामी व्यक्तित्व से हिन्दी साहित्य में जो कीर्तिमान स्थापित किये हैं, वे अविस्मरणीय हैं। उनकी प्रख्यात कृतियों में मधुशाला, मधुकलश, निशानिमंत्रण, एकान्त संगीत, मिलनयामिनी, बुद्ध और नाचघर, जनगीता विशेष उल्लेखनीय हैं जो हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि हैं।

पृष्ठ 1 का शेष

करवा लिये हैं। एक विकाशसील देश के लिए इस तरह के कार्यावकाश उसकी विकास-प्रक्रिया को विलम्बित करते हैं, अवरुद्ध करते हैं। यदि हम राष्ट्रीय-स्तर पर देखें तो पायेंगे कि कार्य-दायित्व और भार काफी हैं, जिसे पूरा करना भी उतना ही ज़रूरी है अन्यथा प्रगति के रास्ते में हम पिछड़ते जायेंगे। प्रतिवर्ष जुलाई से दिसम्बर के शिक्षा-सत्र और अप्रैल से दिसम्बर के बीच केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों के कार्यकाल एवं अवकाश पर दृष्टि डालने से यह बात साफ हो जाती है कि हमारी प्रगति के अवरोधक तत्त्व हैं यह 'शार्ट कट' और अवकाश-प्रियता। अत: व्यक्तिगत और सामाजिक-स्तर पर हमें इस तरह के अवरोधों-व्यवधानों से छुटकारा लेना होगा। बिना विश्राम किये, अक्लांत भाव से साधना के पथ पर अग्रसर रहना होगा तभी संकल्प सिद्ध होगा, लक्ष्य प्राप्त होगा। कवि के शब्दों में कहूँ तो—

वसुधा का नेता कौन हुआ? भूखण्ड-विजेता कौन हुआ?
अतुलित यश-क्रेता कौन हुआ? नव-धर्म-प्रणेता कौन हुआ?
जिसने न कभी आराम किया,
विघ्नों में रहकर नाम किया।

सर्वेक्षण

माताल-उत्सव : दशहरे के दिन, स्थानीय (वाराणसी नगर के) गोदौलिया चौराहे पर चारों ओर से आते हुए दुर्गा-प्रतिमा-विसर्जन के जुलूस दशाश्वमेध घाट की ओर बढ़ रहे थे। इन सभी जुलूसों में कानफाड़-शोर-संगीत की धुन पर उच्छृंखल-नृत्य करते नौजवानों के उन्मादी-समूह एक-दूसरे-से प्रतियोगिता कर रहे थे। अचानक किसी ने टिप्पणी की 'माताल-उत्सव' अर्थात् उन्मत्त-नशेड़ियों का जलसा। यह विशेषण सुनकर मुझे हँसी नहीं आयी, आघात लगा। एक ज़माने में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की प्रेरणा से प्रचलित सार्वजनिक गणेशोत्सव एवं दुर्गोत्सव लोगों की आस्था एवं भक्ति के साथ राष्ट्रीय-चेतना के प्रसारक और जन-संगठन के प्रतीक थे। आज भी नैष्ठिक लोग उसी आस्था के साथ स्थापना और विसर्जन करते हैं किन्तु अपसंस्कृति का व्यापक प्रसार उसे भी निगलने की फिराक़ में है। बाजारीकरण और संस्कारहीनता ने अधिकांश युवकों को अपनी चपेट में लेकर उन्हें 'क्लीव' बना दिया है। आज कहाँ है दुर्गा-पूजा का वह 'वीरभाव', 'आत्म-बलिदान' का वह जज्बा जिसके रक्त-तर्पण से आज़ादी की इबारत लिखी गयी? कहाँ खो गयी आस्था की वह भावभूमि? इस सांस्कृतिक-अराजकता को दूर करने के लिए ज़रूरी है समग्र सांस्कृतिक-क्रान्ति। तभी धारा के प्रवाह को बदला जा सकेगा और छिन्न-भिन्न किया जा सकेगा अपसंस्कृति का यह इन्द्रजाल।

विवाद-ही-विवाद : निर्विवाद नोबेल-पुरस्कार भी अब विवादों के घेरे में है। विशिष्ट उपलब्धि के लिये दिया जाने वाला अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का यह पुरस्कार इस वर्ष ज़्यादा विवादित रहा। साहित्य में भारतीय मूल की लेखिका महाश्वेता देवी की अपेक्षा जर्मन लेखिका हेर्टा मूलर के नाम की घोषणा एवं विश्व शान्ति हेतु प्रयासरत अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा के नाम की घोषणा के साथ नोबेल-पुरस्कार विवादित हो गया है। बुद्धिजीवियों-पत्रकारों में बहसें चल रही हैं, पत्र-पत्रिकाएँ रँगे हुए हैं। नोबेल-पुरस्कारों की चयन-समिति से हमारा अनुरोध है कि तमाम संस्थागत और राजनीतिक दबावों से मुक्त होकर वे इस प्रतिष्ठित पुरस्कार की विश्वसनीयता बनाये रखें।

असंतुलित होकर, ढह जाते हैं विजय-स्तम्भ,
मिट्टी में मिल जाते शिला-लेख, स्मृति-चिह्न सब।

—परागकुमार मोदी

हिन्दी को बाजारू मत बनाइए

—लीलाधर जगूड़ी

मीडिया अब इतना किस्म-किस्म का हो गया है कि पहले की तरह उसे 'प्रिण्ट' और 'इलेक्ट्रॉनिक' कहकर न विभाजित किया जा सकता है, न छुट्टी पाई जा सकती है। मीडिया के बारे में अब तक जितनी आजमाई हुई, ठीक से परीक्षित परिभाषाएँ थीं, सब किनारे कर दी गई हैं। अब वह जरिया नहीं, बल्कि बजरिया (बाजार का हिस्सा) हो गया है। ऐसे में, सकारात्मक शक्तियों की अपेक्षा नकारात्मक शक्तियाँ आज मीडिया का सबसे ज्यादा फायदा उठा रही हैं। क्योंकि वे शक्तियाँ इस काम के लिए मीडिया को दाम चुकाने का सामर्थ्य रखती हैं। यानी मीडिया भी मुनाफे का धंधा बनता जा रहा है।

दुखद स्थिति यह है कि मीडिया को अब सामाजिक मिशन की प्रतिबद्धता से मुक्त मान लिया गया है। कुछ लोग मीडिया को नैतिक-अनैतिक और मानवीय-अमानवीय मानदण्डों से मापे जाने के विरुद्ध हैं। ऐसा वे मीडिया की स्वतन्त्रता के नाम पर करते हैं। आखिर मीडिया अपने को इतना स्वतन्त्र बनाना क्यों चाहता है कि किसी भी सामाजिक अथवा मानवीय मूल्य के प्रति यह उत्तरदायी न हो और वह सबके उत्तरदायित्वों की नैतिक पड़ताल करता घूमे। जो संविधान सूचना के माध्यमों को आजादी देता है, क्या उस संविधान को भी 'मीडिया' की खबर लेने का अधिकार नहीं होना चाहिए? पहले सूचना और मनोरंजन के माध्यम कम थे। लेकिन जितने थे, उनके सामने अज्ञानता और सामाजिक बुराइयों के साथ-साथ विदेशी उपनिवेश के प्रति विद्रोह था। आज माध्यमों में ही परस्पर प्रतिद्वंद्विता है, जो भोंडेपन और अभारतीयता के प्रसारण तक पहुँच गई है। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के पास सूचनाएँ पिटी-पिटाई और अंधविश्वासों को फैलाने वाली अधिक हैं। टीआरपी की नकली प्रतिद्वंद्विता केवल ऊँची दरों पर विज्ञापन बटोरने के लिए स्थापित की गई है। इससे दर्शकों को केवल उनका समय छीनकर ठगा जाता है।

भारतीय टीवी चैनलों के पास सीरियल और सिनेमा दिखाने के अलावा जीवन की कोई दूसरी गतिविधि नहीं है। किसी सीरियल के लेखक के बारे में कोई कुछ नहीं जानता। लेखक की गरिमा को गिराने के प्रयास सीरियल और सिनेमा, दोनों में हुए हैं। अक्सर सिनेमा और धारावाहिकों की रचना के किस्से पढ़ने को मिलते रहते हैं। कई लोग मिलकर उसकी कहानी लिखते हैं। जो काम पहले अपने सम्पूर्ण मनोयोग से एक लेखक करता था, उसको अब एक यूनिट करती है। लेखक अपनी जिम्मेदारी के साथ कोई चीज रचता था, यूनिट की भला क्या जिम्मेदारी? आप किसी मूल लेखक की सहमति और सहयोग से किसी चीज को परिवर्तित करें, तो कम से कम सहमत और असहमत होने के लिए दर्शकों के समक्ष एक लेखक तो होता है। एक व्यक्ति की प्रतिभा का भरोसा चैनलों ने तोड़ा है।

ऐसा लगता है कि आज के मीडिया को हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं पर भरोसा नहीं रह गया है। जबकि हिन्दी में तकनीकी शब्दों को छोड़कर सूक्ष्म और गहरी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए अपार शब्दावली मौजूद है। संस्कृत से हिन्दी ने नए शब्द बनाने का कला-कौशल भी खूब अर्जित किया है। अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावली भी हिन्दी को समृद्ध करने में जुटी हुई है, लेकिन मीडिया उनका लाभ न उठाकर एक ऐसी नकली 'अंग्रेजी मिश्रित बाजार भाषा' फैला रहा है, जिसे विदेशी गेहूँ के साथ आई गाजर घास की तरह उखाड़कर निर्मूल करना पड़ेगा।

प्रत्येक देश और राष्ट्र में अपनी एक सम्पर्क भाषा है। जब भारत में हिन्दी स्वत: वह स्थान लेती जा रही है, तो उसके देसी स्वभाव को अनावश्यक अंग्रेजी शब्दों की भरमार से भ्रष्ट करने की जरूरत क्या है? भारत में अब भी अंग्रेजी में सोचने, बोलने और सपने देखने वाला तबका दस प्रतिशत भी नहीं है। हाँ, अंग्रेजी भाषा को जानने वाला वर्ग इस साठ वर्षों में सम्भवत: 30 प्रतिशत तक पहुँच गया हो। 30 प्रतिशत की भाषा सम्बन्धी साक्षरता को 70 प्रतिशत पर कैसे लादा जा सकता है?

हिन्दी भारत की एकमात्र सफल और स्वाभाविक सम्पर्क भाषा है। इसमें अन्य भारतीय भाषाओं के परिपूरक शब्द और ध्वनियाँ आकर घुल-मिल गए हैं। आजादी के बाद के काव्य और कथा साहित्य के आधार पर जो नया शब्दकोश बनाया जाएगा, उसमें बहुभाषी भारत का अपने लिए नई हिन्दी की निर्मिति का संघर्ष दिखाई देगा। हिन्दी में अभी तक आजादी के बाद पैदा हुए शब्दों का कोई साहित्य आधारित कोश नहीं बना है। आज नए आने वाले शब्दों का वार्षिक कोश प्रकाशित किए जाने की जरूरत है। यूजीसी को इस शब्दकोश योजना के लिए धन उपलब्ध कराना चाहिए।

अंग्रेजी के कुछ शब्दों को तकनीकी क्षमता के कारण अगर हिन्दी में शामिल करना अपरिहार्य हो, तो उन्हें सहजता के साथ स्वीकारा जा सकता है। लेकिन हिन्दी के क्रिया पद के अलावा बाकी अंग्रेजी के शब्दों की रेलमपेल सरासर एक षड्यंत्र है। इस नए भाषिक औपनिवेशिक प्रसार में हमारे किसी भी माध्यम को शामिल नहीं होना चाहिए। हमेशा इस सिद्ध सत्य को याद रखना जरूरी है कि नागरी लिपि से बढ़कर ध्वन्यांकन की हू-ब-हू क्षमता दुनिया की किसी अन्य भाषा में उपलब्ध नहीं है। भारतीय भाषाओं के उच्चारण के अविकल ध्वन्यांकन के लिए रोमन लिपि सबसे अवैज्ञानिक लिपि है। यहाँ दावे के साथ यह बात कह रहा हूँ कि दुनिया के किसी भी भाषा के शब्दोच्चारण को नागरी लिपि में बिना कोई क्षति पहुँचाए ज्यों का त्यों (चाहे वह कितना ही आड़ा-तिरछा उच्चारण क्यों न हो) लिखा और पढ़ा जा सकता है। अंग्रेजी शब्दों को अगर शुद्ध उच्चारण के साथ लिखना हो, तो वह नागरी लिपि में ही सम्भव है। क्योंकि रोमन लिपि में बोलते कुछ और हैं, लिखते कुछ और हैं। ऐसी लिपि को समृद्ध व वैज्ञानिक लिपि वाला भारत कैसे स्वीकार कर सकता है। अंग्रेजी को अगर भारतीय समाज में पैठ बनानी है, तो वह अपनी अक्षम रोमन लिपि को छोड़कर देवनागरी लिपि अपना ले।

जब संयुक्त राष्ट्र के रूप में पूरी दुनिया के लिए एक सरकार की परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है, तो पूरी दुनिया की भाषाओं के लिए वैज्ञानिक रूप से रची हुई 'नागरी लिपि' को स्वीकार करने में क्या कठिनाई है? यह जमाना अब वैश्विक अच्छाइयों को अपनाने का है, इसलिए कह रहा हूँ कि दुनिया की किसी लिपि में नागरी जैसी सरलता और परखी हुई वैज्ञानिकता नहीं है। नागरी में विश्वलिपि बनने की क्षमताएँ हैं। भाषा चाहे जो हो, लिपि देवनागरी हो।

'अमर उजाला' से साभार

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

सवालों के घेरे में सम्मान

—डॉ० महीप सिंह

इस वर्ष का शांति का नोबेल पुरस्कार अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा को देने की घोषणा ने सारे संसार में संदेह भरे प्रश्नों की झड़ी लगा दी है। बराक ओबामा पिछले कुछ समय से संसार के सम्भत: सबसे अधिक चर्चित व्यक्ति हैं। उन्होंने अनेक सदियों से नस्लवादी मानसिकता में जीते अमेरिकी गोरे समाज, को चुनौती दी और अश्वेत राष्ट्रपति बने। सारे संसार में सदियों से कुलीनता का दबदबा रहा है। उन्होंने इस 'मिथ' को भी खण्डित कर दिया, किन्तु उन्हें राष्ट्रपति का पद सम्भाले अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ है। संसार में शांति, निरस्त्रीकरण, परमाणु अस्त्रों पर नियन्त्रण तथा सर्वव्यापी आतंकवाद से निपटने के सम्बन्ध में उनके वक्तव्य तो बहुत आए हैं, किन्तु अभी तक इन सभी की सार्थक परिणति के कोई ठोस परिणाम नहीं दिखे हैं। पिछले राष्ट्रपति जार्ज बुश ने ईरान के परमाणु शक्ति बन जाने की आशंका से ग्रस्त हो जाने के बाद यूरोप में नई प्रक्षेपास्त्र-विरोधी व्यवस्था की योजना बनाई थी। ओबामा ने इस योजना को वापस ले लिया है। इस कार्य के लिए अमेरिकी जनता से चाहे प्रशंसा न मिले, किन्तु यूरोपीय जनता ने इसे पसन्द किया है। इस वर्ष जांबिया, चीन, कोलम्बिया, जार्डन, अफगानिस्तान के एक डॉक्टर, वियतनाम के एक बौद्धभिक्षु, रूस और चेचेन्या के व्यक्तियों को भी इस पुरस्कार के लिए विचारा गया था, किन्तु बाजी मार ले गए बराक ओबामा। यह भी कहा जाता है कि पाँच व्यक्तियों की चयन समिति में से तीन ओबामा को यह पुरस्कार दिए जाने के विरोध में थे। यह भी आश्चर्यजनक है कि चयन समिति के बहुमत सदस्यों के नकारात्मक स्वर के बावजूद ओबामा को यह पुरस्कार कैसे मिल गया। सम्भवत: नार्वे की सरकार ऐसा निर्णय चाहती थी।

अमेरिका सहित सारे संसार में इस निर्णय के विरुद्ध अधिक और पक्ष में कम मत व्यक्त किए गए हैं। मुस्लिम देशों में इसका विरोध कहीं अधिक है। ओबामा की इराक से अमेरिकी सेनाओं के हटाए जाने की घोषणा का सभी ओर स्वागत हुआ है, जबकि अफगानिस्तान में उनकी नीति आज भी बहुत दुविधाग्रस्त है। अफगानिस्तान अमेरिका के लिए दूसरा वियतनाम बन गया है। 2001 में अमेरिका और उसके मित्र देशों ने जो युद्ध छेड़ा था उसमें अभी तक 800 से अधिक अमेरिकी सैनिक मारे जा चुके हैं। ओबामा के लिए यह निर्णय करना सरल नहीं है कि अफगान युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए कितने और सैनिकों की बलि दे दी जाए। रूस का उदाहरण सभी का सामने हैं। ढाई-तीन दशक पहले उसने वहाँ अपनी सशस्त्र सेनाएँ भेजी थीं। वर्षों तक युद्ध करने और असंख्य सैनिकों की बलि देकर उसे कोई सफलता नहीं मिली और अस्त्रों-शस्त्रों का विशाल भण्डार वहीं छोड़कर उसे वहाँ से भागना पड़ा था। उस समय अमेरिका और पाकिस्तान ने रूसी सेनाओं से लड़ने के लिए कट्टरपंथी तालिबानों को बढ़ावा दिया था, आज वही तालिबान इन दोनों देशों के गले की हड्डी बन गए हैं। इस बीच ओबामा प्रशासन ने पाकिस्तान को कितने सौ करोड़ डालर की आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है यह बात तथा यह बात भी किसी से छिपी नहीं है कि आतंकवाद से लड़ने और देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के नाम पर पाकिस्तान अमेरिका से जितना धन प्राप्त करता रहा है उसका उपयोग वह भारत से युद्ध करने के लिए अस्त्र-शस्त्र खरीदने में ही करता रहा है। इसीलिए आज आमेरिका में कितने बुद्धिजीवी यह प्रश्न उठा रहे हैं कि ओबामा ने अभी तक कोई समस्या हल नहीं की है और अशांत क्षेत्रों और देशों के मध्य शांति की स्थापना की कोई नवीन सम्भावनाओं के द्वार नहीं खोले हैं, फिर भी उन्हें शांति के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित करने का क्या अर्थ है?

इस वर्ष साहित्य का नोबेल पुरस्कार रोमानिया में जन्मी जर्मन उपन्यास लेखिका हेर्टा मूलर को देने की घोषणा हुई है। साहित्यिक क्षेत्रों में इस घोषणा को लेकर भी अनेक प्रश्न उठाए गए हैं। इस लेखिका के सम्बन्ध में संसार के विभिन्न देशों के साहित्य रसिकों को अधिक जानकारी नहीं है, यहाँ तक कि यूरोप में भी यह बहुत जाना-पहचाना नाम नहीं है। उनके सम्बन्ध में यह भी कहा गया है कि वह कवयित्री भी हैं। इस दृष्टि से भी उनकी कोई खास पहचान नहीं है। साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए इस बार बांग्ला की प्रख्यात लेखिका महाश्वेता देवी का नाम भी लिया जा रहा था। भारत की सभी भाषाओं में महाश्वेता देवी के उपन्यासों का न केवल अनुवाद हुआ है, उन्हें बहुत सराहा भी गया है। अनेक विदेशी भाषाओं में उनके उपन्यास अनूदित हुए हैं। महाश्वेता देवी के उपन्यासों की पृष्ठभूमि भी बहुत अलग और विशिष्ट है। उन्हें छोड़कर अपेक्षाकृत कम चर्चित लेखिका का इस पुरस्कार के लिए चयनित होना अनेक प्रश्नों को जन्म देता है। विज्ञान के क्षेत्र के अधिसंख्य नोबेल पुरस्कार अमेरिकी वैज्ञानिकों की झोली में पड़ते हैं। चिकित्सा और अर्थशास्त्र के पुरस्कारों की स्थिति भी यही है। अब यह माना जा रहा है कि साहित्य का नोबेल पुरस्कार यूरोप केन्द्रित हो गया है।

यह भी देखने योग्य है कि अधिसंख्य पुरस्कार उपन्यासकारों को प्राप्त हुए हैं। क्या उपन्यास किसी विशिष्ट राजनीतिक मंतव्य की पूर्ति करते हैं? क्या इसी कारण इनकी ओर अधिक ध्यान दिया जाता है? इस सम्बन्ध में सम्भवत: सबसे पहले विवाद रूसी लेखक बोरिस पास्तरनाक के उपन्यास डॉ० जिवागो से प्रारम्भ हुआ। जब पास्तरनाक को इस उपन्यास के लिए नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा हुई तो सोवियत शासकों ने इसे पश्चिमी देशों का षड्यंत्र घोषित किया और पास्तरनाक को बहुत पीड़ित किया। बाद में यही स्थिति एक अन्य रूसी लेखक एलेक्जेंडर सोल्जनित्सीन को लेकर उत्पन्न हुई। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज सम्पूर्ण संसार में नोबेल पुरस्कारों की सर्वाधिक मान्यता और सम्मान है। इन पुरस्कारों का विवादास्पद बनना और उनका प्रश्नों में घिरना निश्चित ही उनकी गरिमा को क्षति पहुँचाएगा।

'दैनिक जागरण' से साभार

'प्रतिभा' नहीं 'पहुँच' हो रही सम्मानित

—नीरज

पद्मभूषण डॉ० गोपालदास नीरज ने सरकारी स्तर पर साहित्यकारों को पुरस्कार देने की परम्परा पर कहा है कि अब साहित्यकार की मेहनत व मेधा नहीं बल्कि ऊँची पहुँच को ही सम्मान दिया जा रहा है। इससे उदीयमान साहित्यकार आगे नहीं बढ़ पाते। चिंतन मनन कर साहित्य साधकों को पुरस्कृत करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कविता मनोरंजन का साधन बनती जा रही है। वे कहते हैं, वर्तमान परिवेश में नए कवियों ने शब्द के अर्थ की सत्ता को भुला दिया है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। कवि व श्रोता गम्भीर नहीं रह गये। कवि सिर्फ तालियाँ व वाहवाही चाहते हैं। काव्य आत्मा के सौन्दर्य का शब्द रूप है। अब जो कविता व गीत लिखे जा रहे हैं उनमें अर्थ की बजाय मनोरंजन पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। यह साहित्य के लिए शुभ नहीं है।

'मिचेलेंजेलो : ला दोता मानो' दुनिया की सबसे महँगी और खूबसूरत किताब मानी जा रही है। www.esquire.com के मुताबिक, इस किताब की कीमत है एक लाख, तीस हजार डॉलर यानी लगभग 65 लाख रुपये। किताब का वजन 62 पाउंड है और इसे मारबल से डिजाइन किया गया है।

आत्मवृत्त में इतिहास

—पुष्पपाल सिंह

प्रेमचंद के सम्पादन में निकलने वाली 'हंस' के आत्मकथा अंक जिसका प्रकाशन जनवरी-फरवरी 1932 में हुआ था, का पुनर्प्रकाशन कर स्व० श्री पुरुषोत्तमदास मोदी ने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इसमें उन्नीसवीं सदी के अन्तिम वर्षों से लेकर बीसवीं सदी के तीन दशकों तक का ऐसा अलभ्य इतिहास व्यवस्थित है, जिसके जरिए तत्कालीन साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों का प्रत्यक्षदर्शी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। उस समय के महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों ने अपने जीवनानुभवों का लेखा-जोखा जिस रूप में प्रस्तुत किया है, उससे न केवल उनके, बल्कि उनके अनेक समकालीन लेखकों के विषय में कितने ही अज्ञात तथ्यों का प्रकाशन होता है। उदाहरणार्थ, हिन्दी के किसी भी इतिहास ग्रन्थ में यह उल्लेख नहीं मिलता कि भारतेन्दु हरिश्चंद्र को 'भारतेन्दु' उपाधि किसने प्रदान की। पं० विनोद शंकर व्यास अपने 'मैं' शीर्षक आत्मवृत्त में लिखते हैं—''*पितामह मेरे बड़े विद्वान थे। उन्होंने अनेकों पुस्तकें लिखी थीं। बाबू हरिश्चंद्र को 'भारतेन्दु' की उपाधि देने का उन्होंने प्रस्ताव किया था। वह उनके अन्तरंग मित्रों में से थे।.....*''

जयशंकर प्रसाद, रायबहादुर लाला सीतारामजी, पं० रामचन्द्र शुक्ल, पं० रामनारायण मिश्र, पं० विनोदशंकर व्यास, शिवपूजन सहाय, रायकृष्णदास, धीरेन्द्र वर्मा, गोपालराम गहमरी, बदरीनाथ भट्ट, सद्गुरुशरण अवस्थी, डॉ० धनीराम प्रेम (सं०-'चाँद'), ठाकुर श्रीनाथ सिंह, प्रेमचंदजी आदि ने अपने आत्मवृत्त लिखकर 'आत्मकथा' की विधा को समृद्धि प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण योग दिया। वस्तुत: इस अंक को पढ़ते हुए ऐसा लगता है मानो टी०वी० के 'हिस्ट्री' चैनल पर रोम-साम्राज्यों के भव्य इतिहास की प्रस्तुति देख रहे हों।

इस अंक की बिलकुल वैसी ही प्रस्तुति—न फॉन्ट में कोई परिवर्तन, न पत्रिका के आकार में, न विज्ञापनों आदि में; पत्रिका के चित्रों को जस का तस छापना एक बड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य था, जिसे पुरुषोत्तम मोदी और उनके प्रकाशन ने बड़ी सतर्कता और निष्ठा से सम्पन्न किया है। प्रारम्भ में ही दिया गया सोमालाल शाह का चित्र मूल रूप में यदि किसी कला-वीथि (आर्ट गैलरी) को मिल जाए तो आज के कला-बाजार में करोड़ों का होगा। उन विभूतियों के फोटो चित्रों को देखकर भी एक अकल्पनीय अनुभूति होती है जिन्होंने हिन्दी का इतिहास बनाया, यथा—श्री महादेव प्रसाद सेठ, विनोदशंकर व्यास (स्व-हस्ताक्षर युक्त), पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी (और उनकी पत्नी), पं० ठाकुरदत्त शर्मा, मि० ब्रेल्सफोर्ड, पं० क्षेत्रपाल शर्मा, पं० रमाशंकर अवस्थी, पं० राधेश्याम कथावाचक, रायकृष्ण दास, किर्लोस्कर औद्योगिक संस्थान के संस्थापक लक्ष्मण काशीनाथ किर्लोस्कर, पं० हरिदास वैद्य आदि विभूतियों का चित्र-दर्शन एक कृतार्थता का बोध देता है। हिन्दी में अपना अमर स्थान अर्जित करने वाली कृतियों, पत्रिकाओं आदि के विज्ञापन पढ़ना उस समय की साहित्यिक गतिविधियों से परिचित होना है। चन्द्रकांता, चन्द्रभागा, भूतनाथ आदि पुस्तकों, 'विश्ववाणी' पत्रिका, 'स्वराज्य' (खंडवा),वीणा, सहेली, वाणी आदि पत्रिकाओं के विज्ञापन बड़े रोचक हैं, कुछ उदाहरण—''*'विश्ववाणी' का अपूर्व स्वागत! पहला अंक समाप्त हो गया!! सर्वत्र 'विश्ववाणी' की धूम मची हुई है। सब ठौर इसकी चर्चा हो रही है।*'' दवाओं, औषधालयों और सरस्वती प्रेस से प्रकाशित प्रेमचंदजी की पुस्तकों के विज्ञापन पढ़ कर लगता है, पाठक उसी देश-काल में स्थित हो गया है।

हंस

आत्मकथा अंक

सम्पादक : **प्रेमचंद**

ISBN : 978-81-7124-631-1

मूल्य : अजिल्द रु० 180.00

इस आत्मकथा अंक में हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता के अनेक अज्ञात रहस्यों पर से पर्दा उठता है। 'मतवाला' पत्रिका की योजना कैसे बनी, कालाकांकर नरेश राजा रामपाल सिंह द्वारा 'हिंदोस्थान' नामक दैनिक पत्र निकालने की संघर्ष यात्रा, आचार्य द्विवेदी और 'सरस्वती' का साहचर्य, अनेक समाचार पत्रों के जन्म और अवसान की कहानी, आदि ऐसे अलभ्य वर्णन यहाँ प्राप्त होते हैं, जिनको पढ़ कर लगता है कि इन महानुभावों के अनुभवों का आधार लेकर तत्कालीन हिन्दी साहित्य का एक प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत किया जा सकता है।

रायबहादुर लाला सीताराम जी की 'अपनी कहानी' को पढ़ कर जाना जा सकता है कि उस समय हिन्दी-उर्दू की पक्षधरता में जो खेमे बने, उनके भाषा विवाद को सुलझाना कितना कठिन कार्य था। जब इन्हें सेवानिवृत्ति के बाद राज्य की टेक्सबुक कमेटी का मेम्बर बनाया गया तो स्थिति कितनी 'जटिल' थी, ''*चिट्ठी आई कि तुम टेक्सबुक कमेटी के मेम्बर बनाये गये। उसी साल गवर्नमेंट ने आज्ञा दी कि हिन्दी-उर्दू की कामन लैंग्वेज रीडरें बनें; जिनकी भाषा एक हो और लिपि भिन्न।*'' इसके लिए जो समिति बनाई गई उसके नौ सदस्य थे। चार हिन्दू, चार मुसलिम और प० रमाशंकर मिश्र भूतपूर्व कलेक्टर—सभापति।

उर्दू के पक्षपातियों ने जिस रूप में अरबी-फारसी की भरमार कर दी तो किस प्रकार दफ्तरों में उर्दू की उत्पत्ति हुई, उसका ब्यौरा द्रष्टव्य है, ''*ईस्ट इण्डिया कम्पनी के कर्मचारी भी मुस्लिम बादशाहों और नवाबों से फ़ारसी में पत्र-व्यवहार करते थे। जब अंग्रेजी सरकार ने देश-भाषा में दफ्तरों की कार्रवाई करने की आज्ञा दी, तो कर्मचारी तो वही थे, उन्होंने नाममात्र के लिए देश-भाषा को स्थान दिया। इससे दफ्तरों में उर्दू की उत्पत्ति हुई। सर चार्ल्स लायल का यह अनुमान है कि उर्दू के जन्मदाता कायस्थ ही थे।*''

इस प्रकार के अनेक रोचक और रोमांचक प्रसंग इस आत्मकथा अंक में भरपूर हैं। शिवपूजन सहाय ने 'मतवाला' कैसे निकाला, इसका जो विवरण दिया गया है वह हिन्दी के इस महत्त्वपूर्ण पत्र की जानकारी के अलावा उस समय के साहित्य सेवकों की निष्ठा का भी परिचय देता है। शिवपूजन सहाय, 'बालकृष्ण प्रेस' के मालिक बाबू महादेव प्रसाद सेठ और मुंशी नवजादिक लाल, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का 'मतवाला' निकालने में जो सहकार रहा और पत्रिका की जो योजना बनी, उसके इतिहास को जानना किसी भी हिन्दी पाठक के लिए एक उपलब्धि के समान है।

''*एक दिन मुंशीजी बाजार से बंगला साप्ताहिक 'अवतार' खरीद लाये। वह हास्य-रस का पत्र था। शायद एक ही पैसा दाम था और शायद पहला ही अंक भी था। किन्तु उसी पर छपा था—* Guaranteed Circulation - 0000000000001. *मसाला भी बड़ा मजेदार था। खूब पढ़ा गया। सोचावट होने लगी—इसी ढंग का एक पत्र हिन्दी में निकाला जाय। रोज हर घड़ी चर्चा छिड़ी ही*

रहती थी। कितने ही हवाई किले बने और कितने ही उड़ गए। बहुत मन्थन के बाद विचारों में स्तम्भन आया। उसी दम बात तय हो गई। बीजारोपण हो गया। ता० 20 अगस्त, 1923, रविवार को सिर्फ बात पक्की हुई। ता० 21, सोमवार को मुन्शीजी ने ही पत्र का नामकरण किया—'मतवाला'। मुन्शीजी को दिन-रात इसी की धुन थी। नाम को सबने पसन्द किया। अब कमिटी बैठी। विचार होने लगा—कौन क्या लिखेगा—पत्र में क्या रहेगा, इत्यादि। 'निरालाजी' ने कविता और समालोचना का भार लिया। मुन्शीजी ने व्यंग्य-विनोद लिखना स्वीकार किया। मैं चुप था। मुझमें आत्मविश्वास नहीं था।'' शिवपूजन सहायजी को अग्रलेख लिखने का काम दिया गया था। अन्ततः '' *श्रावणी संवत 1980 शनिवार (23 अगस्त, 1923) को 'मतवाला' का पहला अंक निकल गया।.... बाजार में जाते ही, पहले ही दिन धूम मच गई।*''

शिवरानी देवी का 'मेरी गिरफ्तारी', मुंशी दयानारायण निगम का 'मेरे जीवन का एक अनुभव', मौलवी महेश प्रसाद आलिम फाजिल का 'मेरी जीवन-गाथा', मुंशी अजमेरी का 'महात्माजी के चरणों में', 'मैंने भी लोकमान्य तिलक को देखा था' (प्रो० मनोरंजन), प्रेमचंदजी का 'जीवन-सार' आत्मकथांश विशेष रूप से पठनीय है। 1916 में जेल से लौट कर लोकमान्य तिलक का जो सम्मान जन-हृदय में था, उसे जानना भी कम रोचक नहीं है। लक्ष्मण-काशीनाथ किर्लोस्कर ने राष्ट्रीयता की भावना से परिचालित होकर जिस प्रकार किर्लोस्कर कारखाने की स्थापना की, वह वर्णन भी एक निष्ठावान उद्योगपति के बनने और ऊपर उठने की प्रेरक गाथा है, '' *पहले-पहल मैंने अपने कृषक-समुदाय की ओर नज़र उठाई और खेती-किसानी के यन्त्र ही बनाये। करबी की कुट्टी काटने का यन्त्र मेरा सर्वप्रथम यन्त्र है और उसे मैंने 1905 में बनाया।*'' पं० श्रीरामजी शर्मा के 'ब्रेल्सफोर्ड से मैं कैसे मिला' आत्मकथा-अंश में तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों का वर्णन पठनीय है।

'हंस' का यह आत्मकथा अंक न केवल साहित्यिक इतिहास के अनेक अनजाने पक्षों, घटना-प्रसंगों का रोचक अध्ययन प्रस्तुत करता है, अपितु अपने समय की राजनीतिक उथल-पुथल, सांस्कृतिक परिवर्तनों और सामाजिक स्थितियों का साक्षात चित्रण भी प्रस्तुत करता है। साथ ही प्रेमचंदजी की पत्रकारिता के स्तर और सूझबूझ से भी परिचित कराता हुआ, एक ऐसा ग्रन्थ-रत्न बन सका है जो हिन्दी के प्रबुद्ध पाठक के लिए सभी दृष्टियों से अपरिहार्य कृति का रूप ले सका है। निश्चित रूप से स्व० पुरुषोत्तम मोदी और उनका प्रकाशन साधुवाद और बधाई के पात्र हैं, वे अपने इस प्रयत्न को एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देख गर्वित हो सकते हैं।

बना रहे बनारस — *विश्वनाथ मुखर्जी* से ....

बनारस की प्रमुख गायिकाएँ

बनारस की कुछ चीजें मशहूर थीं, कुछ मशहूर हैं। जो प्रसिद्ध थीं, अब सिर्फ यादों में रह गई हैं। जो हैं उन्हें हम आज भी देख सकते हैं। जैसे—बनारस के घाट, बनारस की गलियाँ, बनारसी पान। जो सिर्फ इतिहास की वस्तु बन गई हैं, उनमें गिन सकते हैं लकड़ी के खिलौने, पीतल के बर्तन, बनारस की गुंडई, बनारस के रईस या बनारस की गायिकाएँ। बनारस की कई गायिकाओं ने दूर-दूर तक बनारस का झण्डा गाड़ा है। कुछ गायिकाएँ ऐसी थीं जिनके कंठ के साथ पैरों के घुँघरू बोलते थे और कुछ ऐसी थीं जिनकी आवाज का जादू लोगों को सम्मोहित कर लेता था। सम्मोहित होने वालों में जन साधारण से लेकर राजा-रजवाड़े तक हुआ करते थे।

बनारस के रईसों में तीन प्रकार की महफिलों का प्रचलन था : (१) गजरा—इसमें दो गायिकाओं के बीच प्रतियोगिता हुआ करती थी। (२) झूमर—इसमें पाँच गायिकाएँ भाग लेती थीं। (३) दंगल—इसमें कई गायिकाएँ अपने साजिंदों के साथ अपने जलवे बिखेरती थीं।

जिन कुछ प्रमुख गायिकाओं ने अपने जमाने की महफिल लूटी उनमें से कई के नाम आज भी खाँटी बनारसियों के जुबान पर हैं। जैसे—तौकी बाई, बड़ी मैना, दुस्ना बाई, जद्दन बाई, जानकी बाई, गौहर जान, राजेश्वरी बाई, काशी बाई, रसूलन बाई, कमलेश्वरी, दुर्गेश नन्दिनी, छोटी मोती, चम्पा, सिद्धेश्वरी, शाहजहाँ बेगम, भौफटीकेसर, पन्ना, जूही, रतना, विद्याधरी, हुस्ना बाई, बड़ी मोती आदि। इनके यहाँ प्रायः दरबार लगा रहता था—राजाओं-महाराजाओं की तरह। इन दरबारों में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता था। बस वही व्यक्ति रस-ग्रहण कर सकता था जिसे इजाजत मिली हो। यह इजाजत आज के छपे पास की तरह नहीं थी। मौखिक थी और उसे ही प्राप्त होती थी जो कुछ हैसियत रखता था।

ऐसा नहीं था कि ये विख्यात और लोकप्रिय गायिकाएँ हर कहीं बिखरी पड़ी हों और जहाँ से चाहें बटोर ली जाँय। शहर में इनके खास ठिकाने थे और ये ठिकाने आलीशान थे—आमों में बनारसी लँगड़े की तरह। उदाहरण के लिए राजा दरवाजा, भार्गव बुक डिपो, चौक, राजा-दरवाजा कोठी, चित्रा सिनेमा, नारियल बाजार, छत्तातले, दालमण्डी, गोविन्दपुरा आदि।

चूँकि सभी गायिकाओं की कैफियत जानने की गुंजाइश यहाँ नहीं है इसलिए कुछ खास गायिकाओं के बारे में ही जाना जा सकता है।

शिवकुँवर बाई, सरस्वती बाई, गन्नो, बन्नो की परम्परा में खयाल गायकी में शिखर पर थीं। संगीत की शिक्षा रामापुरा के विख्यात सारंगी-वादक बचाऊ मिश्र से प्राप्त की थी। खयाल गायकी के अलावा टप्पा तथा ठुमरी में भी पारंगत थीं। उन्होंने लगभग सभी रियासतों में काशी कीर्ति-पताका फहराई।

बड़ी मैना को अपने समय की गायिकाओं में विशेष सम्मान प्राप्त था। काशीराज ईश्वरी नारायण सिंह और प्रभुनारायण सिंह के समय बड़ी मैना को राज्याश्रय प्राप्त था। अपने सुरीले दमदार, टीपदार कंठ माधुर्य से काशी के प्रसिद्ध आयोजन बुढ़वा मंगल को सुशोभित करती थीं। बड़ी मैना की चर्चा छिड़ने पर उनके एक दीवाने की चर्चा अवश्य होती है जो बड़ी मैना के हर महफिल में उपस्थित रहते थे। उनके दीदार के बाद ही बड़ी मैना अपना कार्यक्रम शुरू करती थीं। परीक्षा लेने के लिए काशी-नरेश ने बड़ी मैना का कार्यक्रम अपने अंतःपुर में रखा। कड़ा पहरा लगाया गया। बड़ी मैना ने अपने कंठ का जादू तभी बिखेरना शुरू किया जब कड़े पहरे के बावजूद उनके प्रेमी वहाँ पहुँच गए। काशी-नरेश ने इस प्रेमी युगल की तारीफ की और सम्मान के साथ दुर्ग से विदा किया।

विद्याधरी 1881 में चंदौली तहसील के खजुरी गांव में पैदा हुईं। इस गाँव ने कई गायिकाएँ और नृत्यांगनाएँ दीं। विद्याधरी का ख्याल, ठुमरी, टप्पा, तराना और सरगम आदि अनेक संगीत-रागों पर अधिकार रहा। गीतगोविंद की अनुपम गायिका के रूप में देश के अनेक रियासतों में अपनी कला का प्रदर्शन कर यश और धन अर्जित किया। विद्याधरी का रूप-सौन्दर्य भी बेहद आकर्षक था। 10 मई 1971 को अपने गाँव में ही अन्तिम सांस ली।

हुस्ना बाई को लोग सरकार कहते थे। साहित्य में भी अभिरुचि थी जिसके कारण भारतेन्दुजी के समीप आईं। उनका एक हिन्दू प्रेमी भी था जिसकी याद में उन्होंने वाराणसी कैण्ट स्टेशन के समीप श्रीकृष्ण धर्मशाला, कुआँ, उद्यान और श्रीकृष्ण मन्दिर का निर्माण कराया। महात्मा गांधी की प्रेरणा से 'तवायफ संघ' की स्थापना हुई जिसकी अध्यक्ष हुस्ना बाई थीं।

विस्तृत अध्ययन हेतु पढ़ें—

बना रहे बनारस

विश्वनाथ मुखर्जी

978-81-7124-683-0

तृतीय संस्करण : 2009 ई०

मूल्य :
अजिल्द रु० 50.00

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

बदमाश-दर्पण — *तेग़ अली* से ....

प्रस्तावना

तेग़ अली का व्यक्तित्व

पचास के कोठे मे सिन। फिर भी युवकोचित बलिष्ठ दृढ़ शरीर। छः फुट ऊँचा कद। सर पर छोटे घुँघराले बालों पर सुनहरे पल्ले का साफा। बिच्छू के डंक की तरह नुकीली चढ़ी हुई मूँछें। साँप की तरह साँवले रंग की, चिकनी चमकीली काया। शरीर पर रेशमी लाल किनारे की नागपूरी धोती। कमर में बनारसी सेल्हे का कसा हुआ फेंटा। फेंटे में खुंसा आबनूस की मूठ का तीखी धार का बिछुआ। हाथ में टीके से हाथ भर ऊँची पक्के मिर्जापुरी बाँस की लाठी, जिसे बड़े प्यार से तेल पिला-पिला कर पाला गया। जेठ-वैसाख की कड़ी धूप, सावन-भादों की झड़ी और माघ-पूस की कड़कड़ाती ठण्ड में भी नंगे बदन।

यह था तेग़ अली का व्यक्तित्व जो ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में अपने उरूज पर थे।

तेग़ अली का जीवन वृत्त

तेग़ अली बनारस के उत्तरी भाग में मुहल्ला तेलियानाला मुत्तसिल भदाऊँ के निवासी थे। बनारस के जन्मे, पले, बढ़े थे। मन मिज़ाज से पूरे बनारसी थे। वे भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के समकालीन थे। भारतेन्दु मण्डल में शामिल थे। वय में भारतेन्दु से ज्येष्ठ थे, भारतेन्दु के बाद भी कुछ वर्षों तक जीवित थे। 'बदमाश-दर्पण' तेग़ अली की ग़ज़लों का दीवान है इसके अधिकांश शेर भारतेन्दु-काल में रचे जा चुके थे। भारतेन्दु ने एक बार एक काल्पनिक मुशायरे का वर्णन लिखा था, उसमें तेग़ अली की कुछ ग़ज़लें भी शामिल की हैं। कुछ ग़ज़लें भारतेन्दु-काल के बाद कही गई होंगी क्योंकि एक शेर में सन् १८८७ के रुम (तुर्किस्तान) और काबुल (अफगानिस्तान) के युद्ध का भी जिक्र है। भारतेन्दु का निधन जनवरी १८८५ ई० में हो गया था।

तेग़ अली मुसलमान थे, जैसा कि उनके नाम से ही स्पष्ट है। किन्तु उनमें धार्मिक असहिष्णुता नहीं थी। उन्होंने रामजी, कन्हैया, प्रयाग, काशी, मथुरा, वृन्दावन, जगन्नाथ धाम, द्वारिका आदि का उल्लेख बारम्बार किया है। हरकदम पर रामजी की कसम खाई है। दुर्गा भवानी, गंगा, तुलसी की कसम खिलाई है। रहीम, रसखान की परम्परा निभाई है।

तेग़ अली संगीत के शौकीन थे। उनके काव्य में विभिन्न वाद्ययंत्रों के उल्लेख से यह ज्ञात होता है कि उनकी वैठक में गाने-बजाने की गोष्ठी जमा करती थी। पं० उदय नारायण तिवारी ने कहा है कि— ''तेग़ अली बड़े मस्त जीव थे, काशी के गवैयों के अखाड़े के आप सरदार थे। होली के दिनों में आप अपना दल लेकर घूमते थे और आशु-कविता करते हुए लोगों का मनोरंजन करते थे, तेग़ अली की कविता में मुहावरों की सफाई है।''*

खेद का विषय है कि बदमाश-दर्पण के अलावा उनकी और कोई रचना उपलब्ध नहीं है।

तेग़ अली शौकीन तबीयत थे। इत्र-फुलेल, फूल-गजरा के प्रेमी थे। रसना-रसिक थे। जैसे सूरदास और जायसी ने अपने काव्य में अपने प्रिय, तरह-तरह के व्यंजनों का उल्लेख बारम्बार किया है वैसे ही तेग़ अली ने अपनी प्रिय बर्सौंधी, बरफी, खाजा, खुरमा, बुंदिया, मगदल, हलुआ, पूड़ी, लुचुई का जिक्र अपनी ग़ज़लों में बार-बार किया है।

गंगा पर डोंगी पर, गंगापार रेती पर, वरुणा किनारे, बहरी तरफ गैबी के कुएँ पर भाँग-बूटी ठंडई छानना, निपटना-नहाना, साफा पानी उनका शगल था। उनके ज़माने में काशी का प्रसिद्ध 'बुढ़वा मंगल' अपनी जवानी पर था। होली के बाद पहले मंगल से चार दिन तक यह मेला गंगाजी पर होता था, जिसमें बनारस के शौकीन नागरिक, चाहे धनी हों चाहे फक्कड़, बजड़ा पटैला पाटते थे। नावों को फ़र्श, चंदवा, झाड़-फ़ानूस से सजाकर बनारस की विख्यात गायिकाओं का गाना होता था। तेग़ अली भी कभी नाव पाटकर, कभी रेती पर शामियाना तानकर महफिल जमाते थे।

तेग़ अली का बदमाश-दर्पण

तेग़ अली की रचनाओं का केवल एक ही संग्रह मिलता है। इसका श्रेय भारत जीवन प्रेस के बाबू रामकृष्ण वर्मा को है। उन्होंने सन् १८९५ में तेग़ अली की २३ ग़ज़लों का दीवान 'बदमाश-दर्पण' नाम से प्रकाशित किया। वर्मा जी स्वयं रस सिद्ध कवि थे। गोपाल-मन्दिर में नियमित रूप से आयोजित होने वाली 'कवि-समाज' की गोष्ठियों में पठित उनकी ब्रज-भाषा की समस्या पूर्तियाँ पुराने संग्रहों में आज भी सुरक्षित हैं। 'बलबीर' उपनाम से, काशी में प्रचलित भोजपुरी बोली में, 'बिरहा' लोक छन्द में, उन्होंने नायिका-भेद की मधुर रचना की थी। वे गुण-ग्राही, रत्न पारखी थे। उन्होंने तेग़ अली की ग़ज़लों की उत्कृष्टता को पहचाना, अन्यथा यह सरस रचना काल कवलित हो जाती। वह प्रकाशन भी आज शताधिक वर्षों के पश्चात सर्व सुलभ नहीं है। लगभग ६० वर्ष पूर्व 'खुदा की राह' के सम्पादक पं० पुरुषोत्तम लाल दवे 'ऋषि' ने भी कोई संस्करण छापा था किन्तु वह देखने को नहीं मिला। संवत् २०२१ वि० में 'ज्ञानमण्डल' ने रुद्र काशिकेय के भाष्य सहित एक संस्करण छापा जो अब ज्ञानमण्डल में भी अलभ्य है।

'बदमाश-दर्पण' नामकरण बहुत उपयुक्त है। बाबू रामकृष्ण वर्मा की यह सूझ है। पहले कहा जा चुका है कि बदमआश का अर्थ है कुजीबी। काशी के गुण्डों पर यह परिभाषा सटीक बैठती है। बदमआश का जो सही प्रतिबिम्ब उपस्थित करे वह बदमाश-दर्पण है। तेग़ अली की इस रचना में तत्कालीन गुण्डों का सही चित्र उपलब्ध होता है।

तेग़ अली ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए उर्दू की ग़ज़ल की विधा अपनाई। ग़ज़ल उर्दू-फारसी कविता का एक काव्य-रूप है। ग़ज़ल अरबी भाषा का शब्द है। फारसी पुस्तकों में इसकी परिभाषा है—'सुख़न अज़ ज़नान गुफ़्तन' या 'सुख़न अज़ माशूक गुफ़्तन'। आम तौर पर इसका अर्थ समझा जाता है 'औरतों से, माशूक से बातें करना' किन्तु अयोध्याप्रसाद गोयलीय के अनुसार इसका सही अर्थ है, औरतों की या माशूक की बातें करना या उनका ज़िक्र करना।

प्रस्तुत ग्रंथ में मूल ग़ज़ल के शेर, उच्चारण के लिए सहायक चिह्नों सहित, स्थूलाक्षरों में सबसे पहले दिए गए हैं। पाठभेद पाद टिप्पणी में दे दिए गए हैं। तत्पश्चात शब्दार्थ दिए गए हैं। जो शब्द उत्तरोत्तर ग़ज़लों में बार-बार आए हैं उनके अर्थ भी पुनः-पुनः दे दिए गए है ताकि पाठकों को पीछे पन्ने उलटकर ढूँढना न पड़े। इससे पुस्तक के अन्त में अभिधान देने की आवश्यकता भी दूर हो गई। भावार्थ के अन्तर्गत प्रत्येक शेर का अन्वय और सरल अर्थ है। प्रत्येक शेर के भावार्थ के नीचे उपयोगी टिप्पणी दी गई है जिसमें शेर के भाव का स्पष्टीकरण है और यदि किसी विशेष संदर्भ की संगति है तो वह भी दे दी गई है। सभी अर्थ और संदर्भ, शब्द कोशों अथवा अन्य ग्रंथों से समर्थित हैं।

विस्तृत अध्ययन हेतु पढ़ें—

बदमाश-दर्पण

तेग़ अली

81-7124-261-8

प्रथम संस्करण : 2002 ई०

मूल्य :
अजिल्द रु० 60.00

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

अमेरिकी विश्वविद्यालयों में हिन्दी, उर्दू को बढ़ावा

अमेरिका के इंडियाना विश्वविद्यालय को माध्यमिक और उच्च विद्यालय के शिक्षकों और विद्यार्थियों को हिन्दी और उर्दू सिखाने के लिये 1,19,999 डॉलर का अनुदान मिला है।

विश्वविद्यालय को यह अनुदान 'स्टारटॉक' फंडिंग के द्वारा मिला है। इसके द्वारा चार सप्ताह की एक ऐसी कार्यशाला का आयोजन होता है जिसमें उच्च विद्यालयों के छात्रों को हिन्दी और उर्दू का प्रशिक्षण दिया जाएगा। इन दोनों भाषाओं का इस्तेमाल भारत और पाकिस्तान में बड़े पैमाने पर किया जाता है। चीनी भाषा के आईयू सेंटर को भी अनुदान मिला है। इसके द्वारा माध्यमिक और उच्च विद्यालय के 20 शिक्षकों को मंदारिन भाषा का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

हिन्दी की पढ़ाई हो अनिवार्य : सिब्बल

केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री कपिल सिब्बल ने देश के सभी स्कूलों में हिन्दी की पढ़ाई अनिवार्य करने की जोरदार वकालत की है।

सिब्बल का कहना है कि इससे हिन्दी भाषी और गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों के छात्रों के बीच जुड़ाव मजबूत होगा। सिब्बल ने यह भी कहा है कि एक बार पूरे देश में हिन्दी का प्रचलन बढ़ जाए तो भारत को जानकारियों के लिए दूसरों की ओर ताकना नहीं पड़ेगा।

सेकेण्डरी एजुकेशन बोर्डों की परिषद की बैठक में सिब्बल ने हिन्दी का दायरा मातृभाषा से बढ़ाकर 'ज्ञानोत्पादक' और 'सबको एक सूत्र में बाँधने वाली भाषा' तक ले जाने की जोरदार वकालत की।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर य०सी० चट्टोपाध्याय की नई पुस्तक जर्मनी के पाठ्यक्रमों में अनिवार्य

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मूर्धन्य इतिहासकार प्रो० उमेश चन्द्र चट्टोपाध्याय की एक नई पुस्तक जर्मनी में पाठ्यक्रमों में अनिवार्य कर दी गई है। ईसाई बहुल जर्मनी इस पुस्तक के प्रभाव से भारतीय मानवतावाद का पक्षधर हो गया है। इसी सत्र से जर्मनी सरकार और वहाँ के स्कूल बोर्ड ने 'इंटर कल्चरल ह्यूमनिज्म' को प्री यूनिवर्सिटी कक्षाओं में अनिवार्य कर दिया है। 'ह्यूमनिज्म इन इण्डिया' डॉ० उमेश चन्द्र चट्टोपाध्याय ने लिखी है। जर्मन सरकार ने गत दिनों जर्मनी में प्रकाशित पुस्तक की प्रति भेजी है। वैश्विक मानवतावाद के पोषक जर्मन इतिहासकार प्रो० जॉन रूजन के साथ तीन वर्ष से प्रो० चट्टोपाध्याय कार्य कर रहे हैं। विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए इस मानवतावाद के पाठ्यक्रम में सफलता आवश्यक होगी। प्रो० चट्टोपाध्याय की मान्यता है कि भारत में मानवतावाद शब्द का प्रयोग भले ही न हुआ हो परन्तु वैदिक काल से वह इसका अनुयायी रहा है। मुख्य रूप से हिन्दू धर्म, जैन-बौद्ध धर्म इसके बड़े उदाहरण हैं। आधुनिक काल में रामकृष्ण परमहंस, दयानन्द सरस्वती, विवेकानन्द, श्री अरविन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, राजा राममोहन राय, महात्मा गाँधी से लेकर अम्बेडकर के आन्दोलन मानवतावाद के बेजोड़ उदाहरण हैं।

देश में प्रकाशन उद्योग

भारत में पुस्तक प्रकाशन उद्योग लगभग 80 अरब रुपए का है। हर साल सभी भाषाओं की 70 हजार पुस्तकें छपती हैं। इनमें से 30 फीसदी अंग्रेजी और इतना ही हिन्दी किताबों का हिस्सा है। एक जानकारी के अनुसार 30 फीसदी सालाना की रफ्तार से बढ़ रहा है पुस्तक प्रकाशन उद्योग। वहीं भारत से होने वाला किताबों का निर्यात 460 करोड़ रुपये का है। इतनी तेजी से बढ़ रहे इस उद्योग की विकास गाथा का प्रमुख कारण पाठक ही हैं।

लंदन में हिन्दी का बोलबाला

लंदन की भूमिगत ट्यूब में सफर करने वाले यात्रियों के लिए जो अत्याधुनिक टच स्क्रीन टिकट मशीनें लगायी गयी हैं उनमें 17 भाषाओं में निर्देश देने की व्यवस्था की गयी है। जब आप भूमिगत ट्यूब में यात्रा करने हेतु टिकट लेने जायेंगे तो आपको टिकट मशीन पर अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी, बंगला, पंजाबी, तमिल और उर्दू में भी निर्देश पढ़ने को मिलेंगे। इससे ट्यूब यात्रियों को सफर में काफी सुविधा होगी।

फ्रांसीसी कम्पनी ने खरीदा बापू का घर

दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग में स्थित महात्मा गाँधी का ऐतिहासिक घर फ्रांस की एक टूरिज्म कम्पनी ने खरीद लिया है। यह विरासत निर्धारित कीमत यानी पौने चार लाख डालर (करीब पौने दो करोड़ रुपए) से दोगुनी कीमत में बिकी है। फ्रांस की कम्पनी बापू के घर को गाँधी संग्रहालय बनाना चाहती है। वकील के रूप में मोहनदास करमचंद गाँधी इस घर में 1908 से 1910 तक रहे। इस घर को उस जमाने के मशहूर आर्किटेक्ट हरमन क्लेनबाक ने डिजाइन किया था।

मारीशस में भोजपुरी बनी राजकीय भाषा

मारीशस में भोजपुरी तीसरी राजकीय भाषा बन गई है। स्कूलों, कालेजों के पाठ्यक्रम में भी इसे शामिल कर लिया गया है। मारीशस के राष्ट्रपति अनिरुद्ध जगन्नाथ ने भोजपुरी सम्मेलन में दिए गए अपने भाषण में कहा है कि भोजपुरी को राजकीय भाषा बनाने का जो आश्वासन दिया था उसे पूरा कर दिया गया है। सम्मेलन में इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की गई कि जिस भाषा को हमारे पूर्वजों ने वर्षों से सम्भाल कर रखा था उसे राजकीय भाषा का दर्जा मिल गया। इस सम्मेलन में भारत से जहाँ 135 सदस्यी दल ने हिस्सा लिया वहीं फ्रांस, इंग्लैण्ड, दक्षिण अफ्रीका, जाम्बिया, हालैंड, सूरीनाम से भी 500 प्रतिनिधियों ने अपनी भागीदारी दर्ज कराई।

गीतकार भारतभूषण पर विशेषांक

विगत 13 वर्षों से निरन्तर प्रकाशित गीत-धर्मी मासिकी 'संकल्प रथ' ने अपना नवीन अंक गीतकार श्री भारतभूषण पर केन्द्रित किया है। सम्पादक श्री राम अधीर द्वारा सम्पादित इस पत्रिका ने अपने प्रकाशन के काल-खण्ड में अब तक 20 से अधिक गीतकवियों पर विशेषांक दिये हैं जिनको काफी सराहना मिली है। इन अंकों में कतिपय दिवंगत कवि हैं और अनेक जीवंत।

भारतभूषण पर केन्द्रित इस अंक में उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर रचनाकार मित्रों एवं विद्वानों के अतिरिक्त श्री भारतभूषण के संस्मरणों का एक आलेख भी पठनीय है। साथ ही उनके अनेक चित्रों के साथ ही उनके लोकप्रिय गीत भी पाठकों तक पहुँचाये गये हैं।

हिन्दी में गूगल का उपयोग

प्रमुख सर्च इंजन गूगल ने साइबर वर्ल्ड की दुनिया में एक और कदम बढ़ाते हुए हिन्दी के साथ-साथ तमिल, मराठी, तेलुगु आदि में सूचना प्राप्त करने की सुविधा उपलब्ध करा दी है। यह सुविधा उन भारतीयों के लिए एक बड़ा तोहफा है, जो अंग्रेजी न जानने के कारण अब तक इंटरनेट का उपयोग नहीं कर पा रहे थे।

दरअसल, गूगल ने यह कदम भारत की विशाल आबादी को ध्यान में रखकर उठाया है, जिसमें 50 प्रतिशत आबादी 25 वर्ष से कम युवाओं की है।

अद्‌भुत बात यह है कि अब अंग्रेजी न जानने वाले हिन्दी भाषी अंग्रेजी की-बोर्ड का उपयोग करते हुए ही मनचाही जानकारी हासिल कर सकते हैं। गूगल पर आप दुनिया भर के समाचार हिन्दी भाषा में पढ़ सकते हैं।

गूगल के माध्यम से आप भारत या दुनिया के किसी भी शहर का नक्शा अपने सामने देख सकते हैं। इन नक्शों के माध्यम से आप उन शहरों के सभी प्रमुख स्थानों, जैसे एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, बस अड्डे, प्रमुख बाजारों, बैंकों, कॉलोनियों, सड़कों के बारे में घर बैठे जान सकते हैं। www.google.co.in के माध्यम से आप मनोवांछित जानकारियों के अलावा सम्बन्धित चित्र भी हासिल कर सकते हैं।

सम्मान-पुरस्कार

हेर्टा मूलर को साहित्य का नोबेल पुरस्कार

स्टॉकहोम। रोमानिया में जन्मीं जर्मन लेखिका **हेर्टा मूलर** को वर्ष 2009 के साहित्य के नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया है। हेर्टा (56) बर्लिन में रहती हैं। उनकी रचनाएँ तानाशाही शासन में अधिकारों से वंचित लोगों के दर्द का व्यापक चित्रण करती हैं।

स्वीडिश अकादमी के अनुसार, वर्ष 1974 में तब के साम्यवादी रोमानिया से जर्मनी आकर बसीं हेर्टा ने अपने लघुकथा संग्रह 'नीदेरुनजेन' (अंग्रेजी में 'लोलैंड्स') के साथ 1982 में साहित्य की दुनिया में कदम रखा। रोमानिया में इस कथा संग्रह पर सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया था। तब पाण्डुलिपि को तस्करी कर पश्चिम जर्मनी ले जाया गया, जहाँ जर्मनी की 'स्पीगेल' पत्रिका में यह 1984 में प्रकाशित हुई। यह रोमानिया में जर्मन भाषा बोलने वाले एक छोटे गाँव की जिन्दगी के बारे में था जिसे जर्मनी में काफी पढ़ा गया। हेर्टा का बचपन तानाशाह निकोलाई चाउसेस्कू के दमनकारी शासनकाल में गुजरा और यही उनकी साहित्यिक प्रेरणा का मुख्य स्रोत बना। वर्ष 1987 में हेर्टा अपने पति के साथ जर्मनी आकर बस गई।

ब्रिटेन की हिलेरी मांटेल को बुकर एवार्ड

ब्रिटिश लेखिका **हिलेरी मांटेल** को उनकी किताब 'वुल्फ हाल' के लिए वर्ष 2009 का 'बुकर' पुरस्कार दिया गया। 57 वर्षीय हिलेरी के अलावा पुरस्कार की दौड़ में पाँच अन्य लेखक भी थे। जिनमें दो बार बुकर जीत चुके जे०एम० कोएत्जी और सारा वाटर्स प्रमुख हैं। लंदन के गिल्ड हाल में हिलेरी को बुकर और 50 हजार पौंड (करीब 37 लाख रुपये) की पुरस्कार राशि प्रदान की गई।

डर्बीशायर की मांटेल 1990 में बुकर पुरस्कार देने वाले जजों के पैनल की सदस्य भी रह चुकी हैं। उन्हें 'वोल्फ हाल' लिखने का विचार 20 साल पहले आया था। चयनकर्ताओं के पैनल के अध्यक्ष जेम्स नाटी ने कहा, ''हमारा फैसला इस शानदार किताब के बड़े कैनवास, संदेश की मुखरता, दृश्यों की परिल्पना और असामान्य तरीके के लेखन पर आधारित था।'' हिलेरी को 2006 में उनके उपन्यास 'एवरी डे इज मदर्स डे' के लिए 'सीबीई पुरस्कार' दिया गया। 1989 में उनकी पुस्तक 'फ्लड्ड' के लिए 'हाल्टबी मेमोरियल' प्राइज मिला जबकि 'ए प्लेस ऑफ ग्रेटर सेफ्टी' को 1993 में 'संडे एक्सप्रेस बुक ऑफ द ईयर सम्मान' दिया गया। हिलेरी की पुस्तकें कामनवेल्थ राइटर्स प्राइज और आरेंज प्राइज के लिए भी नामांकित हो चुकी हैं। हिलेरी की अन्य किताबों में 'एयर मंथ्स आन गाजाह स्ट्रीट', 'ए चेंज ऑफ क्लाइमेट' और 'गीविंग अप गोस्ट : ए मेमायर' प्रमुख हैं। अन्तिम सूची में शामिल अन्य चार लेखकों को भी 2500 पौंड की राशि और उनकी पुस्तक का डिजाइनर संस्करण उपहार के तौर पर दिया गया। सूची में शामिल लेखकों को लंदन के विख्यात ग्राउचो क्लब की एक साल की सदस्यता भी दी गई। इसके पहले भारत के सलमान रुश्दी, अरुंधती राय, अरविंद अंडिगा और अनिता देसाई को बुकर मिल चुका है। लेकिन इस साल अन्तिम पाँच में कोई भारतीय लेखक शामिल नहीं था। विजेता की दौड़ में एएस बायट, जेएम कोएत्जी, एडम फोल्ड्स, सिमोन मेवर और सारा वाटर्स थे।

एक और नोबेल पर भारत का नाम

भारतीय मूल के अमेरिकी **वेंकटरमन रामकृष्णन** ने नोबेल पुरस्कार जीत कर दुनिया में भारत का नाम रोशन किया है। उन्हें रसायन विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने के लिए वर्ष 2009 का नोबेल पुरस्कार मिलेगा।

उन्हें इस पुरस्कार के लिए अमेरिकी वैज्ञानिक थामस ए० स्टेट्ज और इजरायल की वैज्ञानिक अदा ई० योनथ के साथ संयुक्त रूप से चुना गया है। इन तीनों को राइबोसोम की संरचना और इसकी कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में किए गए महत्त्वपूर्ण अध्ययन के लिए यह सम्मान दिया जाएगा। रायल स्वीडिश एकेडेमी ऑफ साइंसेज की ओर से यह घोषणा की गई। रसायन के क्षेत्र में इस अद्‌भुत योगदान के लिए तीनों वैज्ञानिकों को नोबेल पुरस्कार के रूप में 14 लाख अमेरिकी डालर (लगभग 7 करोड़ रुपये) मिलेंगे। जो तीनों में बराबर-बराबर बँटेंगे।

राज्य पुरस्कार के लिए नौ शिक्षक चयनित

उत्तर प्रदेश सरकार ने माध्यमिक शिक्षा के नौ अध्यापकों को वर्ष 2008 के राज्य अध्यापक पुरस्कार के लिए चयनित किया है। यह जानकारी विशेष सचिव, माध्यमिक शिक्षा विक्रमाजीत तिवारी ने दी।

जिन अध्यापकों को पुरस्कार के लिए चयनित किया गया है उनमें डॉ० जाकिर हुसैन (प्रधानाचार्य, मुस्लिम इंटर कालेज, असारा, बागपत), रमेशचंद्र सिंह (प्रधानाचार्य, अभयानंद शिक्षा संस्थान इंटर कालेज, शिवधरिया, भलुअनी, देवरिया), शोभनाथ वर्मा (प्रधानाचार्य, द्वापर विद्यापीठ इंटर कालेज, बरई पारा मया, फैजाबाद), जोखूलाल तिवारी (प्रधानाचार्य, श्रीकृष्ण इंटर कालेज, देवनहरी सहसों, इलाहाबाद), दिनेश यादव (शारीरिक शिक्षा शिक्षक, जवाहर लाल नेहरू स्मारक इंटर कालेज, उन्नाव), डॉ० श्रीमती अखिलेश गुप्ता (प्रधानाचार्य, श्यामलाल अंगनेलाल बालिका इंटर कालेज, शाहजहाँपुर), पारसराम मिश्र (प्रवक्ता अर्थशास्त्र, कालिकाधाम इंटर कालेज, सेवापुरी, वाराणसी), पदमसेन मित्तल (प्रधानाचार्य, परीक्षितगढ़ इंटर कालेज, परीक्षितगढ़, मेरठ) तथा बादूराम गंगवार (प्रवक्ता शारीरिक शिक्षा, राजकीय शीरीरिक शिक्षा महाविद्यालय, रामपुर) हैं। इन सभी को एक विशेष समारोह में सम्मानित किया जाएगा।

डॉ० भास्कर सम्मानित

हिन्दी भोजपुरी के प्रख्यात साहित्यकार **डॉ० भगवान सिंह 'भास्कर'** को भारतीय साहित्यकार संसद समस्तीपुर द्वारा उनकी कालजयी कृति 'संग सागर संगम' (यात्रा संस्मरण) के लिए महापण्डित राहुल सांकृत्यायन राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया।

भारतीय वाङ्मय पीठ, न्यू अलीपुर, कोलकाता (पं० बंगाल) द्वारा उन्हें 'कवि गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ठाकुर सारस्वत सम्मान' से सम्मानित किया गया।

'अपनी भाषा' का पुरस्कार गुजराती लेखिका बिन्दु भट्ट को

कोलकाता में 'अपनी भाषा' संस्था के द्वारा जस्टिस शारदा चरण मित्र स्मृति भाषा सेतु सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। 'अपनी भाषा' संस्था की ओर से यह सम्मान प्रत्येक वर्ष हिन्दी एवं किसी अन्य भारतीय भाषा को जोड़ने का कार्य करने वाले शीर्षस्थ रचनाकार को दिया जाता है। वर्ष 2009 का यह सम्मान अपने रचनात्मक अवदान एवं अनुवाद कार्य द्वारा हिन्दी व गुजराती के बीच सेतु निर्मित करने वाली साहित्यकार **डॉ० बिन्दु भट्ट** को दिया गया। डॉ० भट्ट गुजरात में हिन्दी की अध्यापिका हैं। इन्हें अनुवाद के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

इस अवसर पर 'भारतीय साहित्य की अवधारणा और वर्तमान परिप्रेक्ष्य' विषय पर एक राष्ट्रीय सेमिनार का भी आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि थे प्रख्यात समीक्षक डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी। मुख्य वक्ता प्रो० शम्भुनाथ तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता वागर्थ के सम्पादक डॉ० विजय बहादुर सिंह ने की।

'लोहित किनारे' पर्यटन मंत्रालय से पुरस्कृत

वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक **चन्द्रभूषण** की पुस्तक 'लोहित किनारे' को पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से पुरस्कृत किया गया है। मंत्रालय ने उन्हें यह सम्मान पर्यटन के क्षेत्र में हिन्दी में मौलिक लेखन के लिए दिया है। 'लोहित किनारे' में भारत के पूर्वोत्तर में स्थित असम के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक पहलुओं और वहाँ की भाषा, साहित्य और जनजीवन पर केन्द्रित विविध रूपों और जीवन की धड़कनों को समेटा गया है।

पटाखा को
सर्वश्रेष्ठ हास्य व्यंग्य कवि का सम्मान

नई दिल्ली। प्रख्यात हास्य व्यंग्य के कवि **पं० प्रेम किशोर पटाखा** को नई दिल्ली में चित्रकला संगम समिति द्वारा सर्वश्रेष्ठ हास्य व्यंग्य कवि का सम्मान जाने-माने पत्रकार लेखक डॉ० वीरेन्द्र प्रभाकर के हाथों 21,000/- की धनराशि एवं प्रशस्ति-पत्र दिलवाकर प्रदान किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार डॉ० गोविन्द व्यास भी उपस्थित थे। पं० प्रेम किशोर पटाखा विगत 45 वर्षों से हास्य-व्यंग्य कवि के रूप में अपनी पहचान बनाये हुए हैं। इनकी अब तक 60 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

डॉ० कविता रायज़ादा को
प्रेमचंद कथा साहित्य सम्मान

डॉ० कविता रायजादा की पुस्तक 'पं० श्रीराम शर्मा आचार्य की सांस्कृतिक सामाजिक चेतना' को वर्ष 2008 के मुंशी प्रेमचंद कथा साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान राष्ट्रीय कायस्थ महापरिषद्, जयपुर की ओर से दिया गया है। डॉ० रायज़ादा को सम्मान स्वरूप प्रशस्ति-पत्र, नकद राशि और शॉल दिया गया।

दिव्य स्मृति पुरस्कार समारोह सम्पन्न

समिति द्वारा इसी वर्ष से राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए प्रारम्भ किये गये 'अम्बिका प्रसाद दिव्य राजभाषा सम्मान' से एनएचडीसी लि०, भोपाल के मुख्य कार्यपालक निदेशक **श्री के०एम० सिंह** को सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् श्री दामोदरदत्त दीक्षित और श्रीमती मधु प्रसाद को दिव्य पुरस्कारों तथा डॉ० भरत प्रसाद और श्री सुशील सीतापुरी को दिव्य रजत अलंकरणों से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में विभिन्न पुस्तकों तथा श्री जगदीश किंजल्क एवं विजयलक्ष्मी विभा द्वारा सम्पादित पत्रिका 'दिव्यालोक' एवं प्रो० आनन्द त्रिपाठी द्वारा सम्पादित पत्रिका 'शब्द शिखर' के विशेषांकों का लोकार्पण किया गया।

'पं० प्रतापनारायण मिश्र सम्मान'

मुरादाबाद के युवा कवि **योगेन्द्र वर्मा 'व्योम'** को भाऊराव देवरस सेवा न्यास लखनऊ की ओर से 'पं० प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा साहित्यकार सम्मान-2009' से सम्मानित किया गया है तथा बाल साहित्य का पुरस्कार लखीमपुर खीरी के युवा साहित्यकार **श्री सुरेश सौरभ** को प्रदान किया गया है। दिनांक 20 सितम्बर 2009 को उन्नाव में सम्पन्न सम्मान समारोह में सम्मान स्वरूप माँ सरस्वती की प्रतिमा, मानपत्र, अंग वस्त्र, प्रशस्ति पत्र, पं० प्रतापनारायण मिश्र द्वारा रचित साहित्य तथा रु० 5000/- की नकद धनराशि भेंट की गई। सम्मान समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार श्री सूर्यनारायण शुक्ल ने की, मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मन्त्री श्री हृदयनारायण दीक्षित थे तथा विशिष्ट अतिथि पूर्व पुलिस महानिरीक्षक उत्तर प्रदेश श्री महेशचन्द्र द्विवेदी थे।

प्रियदर्शन को 'स्पंदन कथा पुरस्कार'

4 अक्टूबर को साहित्य, संस्कृति तथा ललित कलाओं को समर्पित भोपाल की संस्था 'स्पंदन' द्वारा स्थापित पुरस्कारों की शृंखला में स्पंदन कथा पुरस्कार 2009 चर्चित युवा कथाकार **श्री प्रियदर्शन** को उनके कथा-संग्रह 'उसके हिस्से का जादू' को देने की घोषणा की गई। पुरस्कार स्वरूप ग्यारह हजार रुपये की राशि, शॉल, श्रीफल तथा स्मृति-चिह्न दिसम्बर माह में आयोजित पुरस्कार समारोह में दिए जाएँगे।

बलराज पुरी को पुरस्कार

81 वर्षीय मशहूर पत्रकार, लेखक और मानवाधिकार कार्यकर्ता **बलराज पुरी** को राष्ट्रीय एकता के लिए विगत दिनों सोनिया गांधी ने प्रतिष्ठित इन्दिरा गाँधी पुरस्कार से नवाजा।

प्रो० मारुतिनंदन तिवारी एवं डॉ० अशोक जैन कर्नाटक में पुरस्कृत

कला इतिहास विभाग के **प्रो० मारुतिनंदन तिवारी** एवं जैन बौद्ध दर्शन विभाग के **डॉ० अशोककुमार जैन** को रविवार दिनांक 04 अक्टूबर 2009 को भारत की विशालतम गोम्मटेश्वर प्रतिमा स्थल श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) में जैन परम्परा के शिखर संत पूज्य उपाध्याय ज्ञान सागर एवं स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न भव्य समारोह में मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ने सम्मानित किया। प्रो० तिवारी को भारतीय संस्कृति इतिहास एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में उनके विशिष्ट योगदान तथा डॉ० जैन को जैन दर्शन पर उनके योगदान के लिए क्रमश: 51 हजार रुपये, स्मृति चिह्न और अंगवस्त्रम प्रदान किया गया। विद्वान द्वय को यह पुरस्कार मेरठ के श्रुत सम्वर्धन संस्थान द्वारा प्रदान किया गया है।

हरिनारायण को बृजपाल द्विवेदी साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान

दिल्ली से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'कथादेश' के सम्पादक **हरिनारायण** को वर्ष 2008 के लिये 'पं० बृजपाल द्विवेदी अखिल भारतीय साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान' दिए जाने की घोषणा की गयी है।

इस सम्मान के अन्तर्गत किसी साहित्यिक पत्रिका का श्रेष्ठ सम्पादन करने वाले सम्पादक को 11 हजार रुपए, शाल, श्रीफल, प्रतीकचिह्न एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। श्री हरिनारायण 1980 से 'कथादेश' का सम्पादन कर रहे हैं। वे 'हंस', 'विकासशील भारत', 'रूप कंचन' के सम्पादन से भी जुड़े रहे हैं। उनके सम्पादन में 'कथादेश' ने देश की चर्चित साहित्यिक पत्रिकाओं में अपनी जगह बना ली है।

श्रीप्रकाश शुक्ल को मिला
वर्तमान साहित्य पुरस्कार

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के रीडर **डॉ० श्रीप्रकाश शुक्ल** को उनके काव्य संग्रह 'बोली बात' के लिए वर्ष 2009 का वर्तमान साहित्य का 'मलखान सिंह सिसोदिया कविता पुरस्कार' दिया गया है। इसके तहत उन्हें 11 हजार रुपये की नगद राशि और प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा।

2009 का कथाक्रम सम्मान
महेश कटारे को

वर्ष 2009 का 'आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान' वरिष्ठ एवं चर्चित कथाकर **महेश कटारे** को दिए जाने का निर्णय लिया गया है।

कथाक्रम समिति के संरक्षक श्रीलाल शुक्ल की अध्यक्षता में समिति ने यह निर्णय लिया। प्रत्येक वर्ष एक प्रतिष्ठित कथाकार को 'आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान' प्रदान किया जाता है, जिसके अन्तर्गत 15000/- की धनराशि तथा सम्मान चिह्न, सम्मान पत्र भेंट किये जाते हैं।

यह सम्मान दिनांक 7 नवम्बर 2009 को कथाक्रम के वार्षिक आयोजन कथाक्रम 2009 के अवसर पर लखनऊ में दिया जायेगा।

डॉ० नंदकिशोर त्रिखा सम्मानित

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता व संचार विश्वविद्यालय की ओर से स्थापित 'गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान' के रूप में वरिष्ठ पत्रकार **डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा** को एक लाख रुपये की राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र दिया जाएगा। विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र ने इस राष्ट्रीय सम्मान के लिए गठित चयन समिति की सर्वसम्मति से अनुशंसा के आधार पर 6 अक्टूबर को यह घोषणा की।

पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न

27 सितम्बर को रवीन्द्र भारती, हैदराबाद में श्री वेमूरि आंजनेय शर्मा स्मारक ट्रस्ट द्वारा श्री शर्माजी की 93वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित समारोह में तीन पुरस्कार वितरित किए गए। वर्ष 2009 के लिए पुरस्कार *तेलुगु कथा साहित्य के लिए* साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत **श्री अब्बूरि छाया देवी** को, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से *हिन्दी सेवाओं के लिए* पुरस्कृत डॉ० विजयराघव रेड्डी को और चार विश्वविद्यालयों में थिएटर आर्ट्स विभागों में सेवारत पूर्व प्रोफेसर **डॉ० चाट्ल श्रीरामुलु** को

प्रदान किए गए। अध्यक्षता हैदराबाद दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक डॉ० पालकुर्ति मधुसूदन राव ने की। आन्ध्र प्रदेश के मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ० आई०वी० सुब्बाराव ने तीनों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया।

राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत हुए डॉ० स्वर्णकार

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में महामहिम राष्ट्रपतिजी के मुख्य आतिथ्य और केन्द्रीय गृहमंत्री पी० चिदम्बरम की अध्यक्षता में आयोजित एक भव्य समारोह में दमोह क्षेत्र के चिकित्सक **डॉ० प्रेमचंद्र स्वर्णकार** को उनकी पुस्तक 'संतुलित भोजन' के लिए महामहिम प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने 'राजीव गाँधी ज्ञान-विज्ञान सम्मान' से सम्मानित किया।

साहित्यकारों को राष्ट्रभाषा सम्मान

24 सितम्बर को राष्ट्रभाषा-उत्सव 2009 के उपलक्ष्य में हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने में विशेष योगदान के लिए **श्री लक्ष्मीशंकर वाजपेयी** सहित छह हिन्दी भाषा विशेषज्ञों को 'राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। संसद के केन्द्रीय कक्ष में आयोजित समारोह में 'राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान' पाने वाले अन्य विशेषज्ञ हैं—सर्वश्री उषा देव, अर्चना त्रिपाठी, नंदन हितैषी, रेखा व्यास और अलका सिन्हा। इन सभी को प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-चिह्न और शॉल भेंट किए गए। इस मौके पर दो पुस्तकों—'लल्लेश्वरी' तथा 'सूचना का अधिकार अधिनियम' का विमोचन किया गया।

शैलेश मटियानी स्मृति युवा कथाकार पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा सुविख्यात कथाकार स्वर्गीय शैलेश मटियानी की स्मृति में स्थापित चित्रा कुमार युवा कथाकार पुरस्कार 2009 के लिए युवा कथाकारों की प्रविष्टियाँ 31 दिसम्बर 2009 तक आमन्त्रित की गई हैं। यह पुरस्कार अधिकतम 35 वर्ष आयु के युवा कथाकार के ऐसे प्रथम हिन्दी कथा संग्रह को प्रदान किया जाएगा, जो वर्ष 2007 से पूर्व प्रकाशित न हुआ हो। कथा संग्रह का चयन एक समिति करेगी। पुरस्कार के रूप में 11000 रुपये की राशि, शाल तथा श्रीफल प्रदान किया जाता है। कथाकार द्वारा स्वयं प्रविष्टि भेजने की दशा में अपने परिचय और दूरभाष / मोबाइल क्रमांक सहित कहानी संग्रह की दो प्रतियाँ निर्धारित तिथि तक मन्त्री संचालक, मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी भवन, भोपाल को भेजनी होगी।

संगोष्ठी/लोकार्पण

प्रेमचंद और आम आदमी

जनवादी लेखक संघ के तत्त्वावधान में 'प्रेमचंद और आम आदमी' विषय पर संगोष्ठी सम्पन्न हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ० बाकर ज़ैदी तथा संचालन डॉ० गिरीशचंद्र श्रीवास्तव ने किया। डॉ० जैदी ने कहा कि प्रेमचंद का साहित्य आम आदमी की पैरोकारी करता है और उनकी रचनाएँ इसलिए दिल को छूती हैं कि उन्होंने आम आदमी की भाँति जिन्दगी जी कर साहित्य का लेखन किया।

आचार्य शुक्ल ने आयातित रहस्यवाद को खारिज किया।

वाराणसी। विगत दिनों आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य-शोध संस्थान सभागार में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की 125वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में 'हिन्दी आलोचना में आचार्य शुक्ल की भारतीय दृष्टि' विषयक संगोष्ठी में प्रख्यात आलोचक प्रो० रामदेव शुक्ल ने कहा कि हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने विलियम जोन्स व ग्रियर्सन की दृष्टि को आयातित रहस्यवाद कहकर खारिज किया।

आचार्य शुक्ल की आलोचना ने विदेशी आयातित रहस्यवाद व स्वीकृति वाद को निरस्त कर दिया। प्रो० राधेश्याम दुबे ने कहा कि आचार्य शुक्ल ने भारतीय ज्ञान की परम्परा को दृढ़ता से स्थापित किया। उन्होंने तुलसीदास को अपना कवि व भगवान राम को नायक माना। डॉ० कन्हैया सिंह ने कहा कि आचार्य शुक्ल ने परम्परा व विज्ञान को स्थापित किया। इस अवसर पर प्रो० श्यामसुन्दर शुक्ल, प्रो० युगेश्वर, प्रो० दीनबंधु पाण्डेय, प्रो० श्रीनिवास पाण्डेय व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के अनेक शोध छात्रों ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रो० श्रीनिवास पाण्डेय की पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी कविता की परख' का विमोचन प्रो० रामदेव शुक्ल ने किया।

हिन्दी लाओ देश बचाओ समारोह आयोजित

साहित्य मण्डल, नाथद्वारा के तत्त्वावधान में दिनांक 13-09-09 से 15-09-09 तक हिन्दी लाओ देश बचाओ समारोह आयोजित हुआ। इसमें देश के पन्द्रह प्रान्तों से सौ से अधिक साहित्यकार सम्मिलित हुए। दिनांक 13 सितम्बर को प्रात:काल आयोजित व्यूहिक विचार विमर्श में छ: हिन्दी सेवियों ने अपने आकट्य तर्कों के आधार पर हिन्दी की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए सरकार से पुरजोर माँग की और हिन्दी भाषा के प्रति सरकारी उदासीनता को तथ्यात्मक रूप से उजागर किया। इस क्रम में आयोजित हिन्दी उपनिषद् में विद्वानों ने बताया कि ब्रिटिश सरकार अपने दो सौ वर्षों के शासनकाल में भारत को अंग्रेजी के माध्यम से इण्डिया नहीं बना सकी वहीं भारतीय मैकालों ने स्वतन्त्र भारत के 62 वर्षों में विदेशी भाषा अंग्रेजी को प्रश्रय देकर भारत को इण्डिया बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। विदेशी शासन में भारत में अंग्रेजी शिक्षा, सरकारी स्कूलों में पाँचवी कक्षा से प्रारम्भ होती थी पर स्वतन्त्र भारत में वह भी अब हमारे शासकों ने पहली कक्षा से प्रारम्भ कर दिया है। निश्चित रूप से यह राष्ट्रभाषा हिन्दी का जानाबूझा अपमान तिरस्कार तो है ही, भारतीय सभ्यता और संस्कृति को जड़मूल से नष्ट करने का अघोषित षड्यन्त्र है। इस अवसर पर देश की साहित्यिक पत्रिकाओं के बारह प्रदेशों से आए हुए बारह सम्पादकों को सम्पादक रत्न की उपाधि प्रदान की गई और अठारह प्रदेशों से आए हुए तीस हिन्दी सेवी विद्वानों को 'हिन्दी भाषा भूषण' की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। पत्रकार बन्धुओं को 'पत्रकार-प्रवर' की मानद उपाधि दी गई।

ज्ञान-विज्ञान को साथ लेकर चलें : डॉ० कर्ण सिंह

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कोर्ट की बैठक में सदस्यों ने कुछ नई सलाह के साथ वार्षिक रिपोर्ट का अनुमोदन किया। इस दौरान कुलाधिपति डॉ० कर्ण सिंह ने विश्वविद्यालय की गरिमा के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था को नया तेवर देने का अनुरोध किया। कहा कि ज्ञान और विज्ञान को साथ लेकर चलना होगा। इसके साथ ही मानवता व सामाजिकता का भी ध्यान रखना होगा।

डॉ० कर्ण सिंह ने 21वीं सदी के लिए यूनेस्को के इंटरनेशनल कमीशन ऑन एजुकेशन की रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि शिक्षा के चार स्तम्भ यानी 'लर्निंग टु नो, लर्निंग टु डू, लर्निंग टु लिव टुगेदर व लर्निंग टु बी' है। इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य का व्यक्तित्व बहुमुखी तथा बहुआयामी होता है।

डॉ० लोहिया जन्म शताब्दी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रखर समाजवादी विचारक और भारत के अप्रतिम दार्शनिक राजनेता डॉ० राममनोहर लोहिया की जन्म शताब्दी के अवसर पर मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और पण्डित रविशंकर शुक्ल हिन्दी भवन न्यास, भोपाल द्वारा डॉ० लोहिया जन्म शताब्दी समारोह समिति, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय तथा माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय के सहयोग से 10 और 11 अक्टूबर को भोपाल के हिन्दी भवन में डॉ० लोहिया की चिंतनधारा पर केन्द्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में समाजवादी विचारकों, अध्येताओं और समाजवादी राजनीतिक कार्यकर्ताओं के अलावा साहित्यकारों, समाज सेवियों और अन्य बुद्धिजीवियों ने भी उत्साहपूर्वक

भाग लिया। इस दो दिवसीय वैचारिक अनुष्ठान में युवा वर्ग की सक्रिय भागीदारी विशेष उल्लेखनीय रही। युवाओं ने अपनी अच्छी उपस्थिति के साथ-साथ प्रत्येक सत्र के अंत में रखे गये हस्तक्षेप कार्यक्रम के अन्तर्गत खुलकर अपने विचार रखे और विद्वानों के व्याख्यानों पर अपनी अध्ययनपूर्ण प्रतिक्रियाएँ भी दीं।

'डॉ० लोहिया और भारतीय राजनीति' पर विमर्श के साथ आरम्भ हुए उद्घाटन सत्र के बाद दो दिनों के विभिन्न सत्रों में क्रमशः 'डॉ० लोहिया और सप्त क्रान्ति', 'डॉ० लोहिया का सांस्कृतिक चिन्तन और राष्ट्रभक्ति', 'डॉ० लोहिया की भाषा नीति', एवं 'लोहिया, जयप्रकाश और अगस्त क्रान्ति' जैसे विषयों पर विद्वान वक्ताओं ने विमर्श में भागीदारी की। प्रमुख विद्वान चिन्तकों में थे सर्वश्री प्रो० सत्यमित्र दूबे, अच्युतानंद मिश्र, प्रो० रामेश्वर मिश्र पंकज, रामनारायण परमार, अरविन्द मोहन, प्रो० रमेशचन्द्र शाह, न्यायमूर्ति आर०डी० शुक्ला, प्रो० रमेश दवे, श्रीमती सविता वाजपेयी आदि।

हिन्दी विभाग में विकल साकेती

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा सांस्कृतिक सभागार में 1 अकबरपुर के पूर्व विधायक एवं प्रसिद्ध गज़लकार विकल 'साकेती' का एकल गज़ल-पाठ का आयोजन पूर्व प्रशासनिक अधिकारी एवं हिन्दी संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित डॉ० राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय की अध्यक्षता में हुआ। अतिथियों का स्वागत हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो० राधेश्याम दूबे द्वारा किया गया। विकल 'साकेती' ने 'लंका जीतकर राजगद्दी सम्भाले राम' शीर्षक मंगल गीत से काव्य पाठ का आरम्भ किया। समसामयिक आलोचना प्रत्यालोचना पर व्यंग्य करते हुए साकेती ने कहा—

इधर हम नई कल्पना कर रहे हैं।
उधर लोग आलोचना कर रहे हैं॥
हर इक ओर से व्यंग्य बाणों की वर्षा
हमी हैं कि जो सामना कर रहे हैं॥

कार्यक्रम के अध्यक्ष, आयुक्त व पूर्व मुख्य कार्यपालक अधिकारी (काशी विश्वनाथ मन्दिर) ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि छात्र-छात्राएँ हमारे ज्ञान एवं परिश्रम की थाती हैं।

प्रख्यात आलोचक व हिन्दी विभाग के प्रो० अवधेश प्रधान ने काव्य की समीक्षा करते हुए कहा कि कविता जीवन को जोड़ती है यह समाज के लिए आवश्यक है और बनी रहेगी। संचालन डॉ० वशिष्ठ अनूप एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो० बलिराज पाण्डेय ने किया।

गुजरात विद्यापीठ : हिन्दी विभाग में

गुजरात विद्यापीठ के हिन्दी भाषा साहित्य विभाग में मॉरीशस स्थित महात्मा गाँधी संस्थान के अन्तर्गत भारतीय भाषा कला संस्कृति भवन की निदेशक श्रीमती रश्मि पारधोनी ने हिन्दी भाषा और साहित्य के छात्र-छात्राओं को सम्बोधित किया। विद्यापीठ और हिन्दी विभाग के छात्रों एवं अध्यापकों को गाँधी-दर्शन से प्रभावित देखकर श्रीमती रश्मि अभिभूत थीं। इसी क्रम के दूसरे आयोजन में विभागाध्यक्ष डॉ० मालती दूबे की प्रेरणा से 'रामकथा' के अद्वितीय शोधकर्ता 'डॉ० फादर कामिल बुल्के' के जन्मशताब्दी वर्ष का समापन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें विद्वानों ने 'फादर' का स्मरण करते हुए रामकथा साहित्य और शोध पर विचार प्रस्तुत किये।

बज्जिका दिवस व लोकार्पण समारोह

मुजफ्फरपुर में अरुणादित्य सांस्कृतिक संस्थान एवं बज्जिका जन-जागरण मंच, मुजफ्फरपुर द्वारा आयोजित बाज्जिका दिवस सह लोकार्पण समारोह का आयोजन गत 28 सितम्बर 2009 को किया गया। अध्यक्षता देवेन्द्र राकेश ने की। मुख्य अतिथि सियाशरण प्रसाद थे। इस अवसर पर श्री ईश्वरचन्द्र प्रसाद द्वारा लिखित 'बज्जिकामांचल का इतिहास' का लोकार्पण डॉ० अवधेश्वर 'अरुण' ने किया।

केदारनाथ की कविताओं में देशी ठाट : नामवर सिंह

केदारनाथ अग्रवाल एक क्रान्तिकारी कवि हैं, जिनको पढ़ने के बाद आँसू नहीं गिरते, मुट्ठी बँधती है। उनकी कविता में आम आदमी का देशी ठाट दिखाई देता है। उनकी कविता में किसान, मजदूर और हाशिएँ के तमाम लोगों ने जगह पाई है। उनकी कविता में ग्रामीण जीवन की सहज उपस्थिति है। यह बातें वरिष्ठ व ख्यातनाम आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद स्थित क्षेत्रीय केन्द्र के 'सत्यप्रकाश मिश्र सभागार' में **केदार व्याख्यानमाला - एक** के दौरान कही। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति एवं वरिष्ठ कथाकार विभूतिनारायण राय ने कहा कि केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्य धारा की त्रयी के महत्त्वपूर्ण रचनाकार हैं।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में हिन्दी माह समापन समारोह

भारतीय पेट्रोलिमय संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा सितम्बर माह में आयोजित हिन्दी माह सम्बन्धी गतिविधियों के सफलतम आयोजन के उपरान्त मुख्य समारोह संस्थान के लवराज कुमार स्मृति प्रेक्षागृह में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ० करुणा शंकर उपाध्याय, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई ने हिन्दी के वैश्विक सन्दर्भ पर चर्चा करते हुए बताया कि दुनिया की तीन सबसे बड़ी भाषाओं में हिन्दी का स्थान दूसरा है।

डॉ० उपाध्याय ने उपस्थित लोगों का आह्वान करते हुए कहा कि भाषा का प्रयोग प्रयोक्ता पर निर्भर करता है। यह ज्ञातव्य है कि हिन्दी प्रयोक्ताओं की विशालता के कारण ही बाजार की शक्तियाँ, बहुराष्ट्रीय निगम आदि हिन्दी के प्रयोग के लिए आज मजबूर हैं। टी०वी० चैनलों से हिन्दी को विश्व-व्याप्ति मिली है। 1991 के उपरान्त जन्म लेने वाली पीढ़ी हिन्दी का प्रयोग कर रही है। यह हिन्दी के लिए अत्यन्त अनुकूल समय है।

कार्यक्रम को अध्यक्ष डॉ० राम सजन पाण्डेय, कार्यकारी निदेशक डॉ० अरुणाभा दत्ता, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ० दिनेश चमोला ने सम्बोधित किया।

स्मरण : हबीब तनवीर

हबीब कभी हार न मानने वाले इंसान थे। संकल्पनों के लिए निरन्तर लड़ते रहना उनकी खासियत थी। उन्होंने अपने नाटकों में हिन्दू और मुस्लिम कट्टरपंथियों पर करारा प्रहार किया। वह मानवता के जबरदस्त हिमायती थे। यह बातें रंगकर्म समीक्षक और 'रंग हबीब' पुस्तक के लेखक भारतरत्न भार्गव ने महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम 'स्मरण : हबीब तनवीर' के दौरान कही। कार्यक्रम के अध्यक्ष वरिष्ठ नाट्यकर्मी अजित पुष्कल ने कहा कि सृजनात्मकता का क्षेत्रीयता से बहुत गहरा नाता है, गरीब गाँवों में भारतीय संस्कृति बसती है, हबीब ने इसे हमेशा अपने जेहन में रखा और पात्रों के माध्यम से थियेटर की भाषा गढ़ी। रंगकर्मी अनिल रंजन भौमिक के अनुसार हबीब साहब के जाने के बाद जो रिक्तता रंगकर्म के क्षेत्र में पैदा हुई है उसे पूरा होने में समय लगेगा। नाट्य कर्मी नंदल हितैषी ने कहा कि हबीब तनवीर को याद करने का मतलब दलित शौर्य और वनवासी स्थितियों को याद करना है। विश्वविद्यालय के विशेष कर्त्तव्य अधिकारी (संस्कृत) एवं नाट्य लेखक श्री राकेश ने कहा कि हबीब तनवीर ने हमेशा हाशिए के लोगों की वकालत की।

इस अवसर पर सुधन्वा देशपाण्डे की फिल्म 'गाँव का नाव थियेटर मोर नाव हबीब' का भी प्रदर्शन किया गया। संचालन केन्द्र-निदेशक संतोष भदौरिया ने किया।

हिन्दी दिवस मनाया गया

14 सितम्बर को राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति में हिन्दी विभाग एवं राजभाषा विभाग के सहयोग से 'हिन्दी दिवस' एवं 'तुलसीदास हिन्दी परिषद्' का उद्घाटन प्रो० हरेकृष्ण शतपथी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो० जी० पद्मजा देवी उपस्थित थीं।

पुस्तक परिचय

स्त्रीत्व : धारणाएँ एवं यथार्थ

प्रो० कुसुमलता केडिया
प्रो० रामेश्वरप्रसाद मिश्र

द्वितीय संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 192

सजि. : रु० 180.00 ISBN : 978-81-7124-680-9
अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-7124-681-6
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

स्त्री-प्रश्न पर हिन्दू दृष्टि से सभ्यतामूलक विमर्श

विश्व की 'एकेडमिक्स' यूरोईसाई सिद्धान्तों, अवधारणाओं एवं विचार-प्रयत्यों से संचालित है। आधुनिक स्त्री-विमर्श पूरी तरह पापमय, हिंसक औ सेक्स के विचित्र आतंक से पीड़ित ईसाइयत द्वारा गढ़ा गया है। गैरईसाई देशों एवं सभ्यताओं में उनके अपने ऐतिहासिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिदृश्य में उभरी-पनपी 'स्त्रीत्व' की धारणा एकेडमिक बहस के बाहर है।

यह पुस्तक इस यूरोकेन्द्रित पूर्वाग्रह को किसी सीमा तक संतुलित करने का प्रयास करती है, गैरईसाई सभ्यताओं में विद्यमान स्त्री-विमर्श को हिन्दू दृष्टि से सामने लाकर।

यह पुस्तक बताती है : यूरोप में कैथोलिकों एवं प्रोटेस्टेन्टों ने पाँच सौ शताब्दियों तक करोड़ों निर्दोष, सदाचारिमी, भावमयी श्रेष्ठ स्त्रियों को डायनें औ चुड़ैल घोषित कर जिन्दा जलाया, खौलते कड़ाहों में उबाला, पानी में डुबो कर मारा, बीच में जिन्दा चीरा, घोड़े की पूँछ में बँधवा कर सड़कों-गलियों में इस प्रकार दौड़ाया कि बँधी हुई स्त्री लहूलुहान होकर दम ही तोड़ दे।

वे सभी पाप छिप-छिपा कर नहीं, सरेआम पूरे धार्मिक जोशो-खरोश से, पादरियों की आज्ञा से, पादरियों के प्रोत्साहन से और पादरियों की उपस्थिति में किये जाते थे तथा चर्चों के सामने सूचीपत्र टँगे रहते थे कि स्त्रियों को खौलते तेल में उबालने के लिए 48 फ्रैंक, घोड़े द्वारा शरीर को चार टुकड़ों में फाड़ने के लिए 30 फ्रैंक, जिन्दा गाड़ने के लिए 2 फ्रैंक, चुड़ैल करार दी गयी स्त्री को जिन्दा जलाने के लिए 28 फ्रैंक, बोरे में भरकर डुबोने के लिए 24 फ्रैंक, जीफ, कान, नाक काटने के लिए 10 फ्रैंक, तपती लाल सलाख से दागने के लिए 10 फ्रैंक, जिन्दा चमड़ी उतारने के लिए 28 फ्रैंक लगेंगे।

कौन विश्वास करेगा कि ख्रीस्तीय यूरोप में सेक्स एक आतंक था और गोरे पुरुष अपनी औरतों से थरथराते काँपते डरते रहते थे कि जाने कब उसके काम-आकर्षण में फँस जाँय क्योंकि स्त्री तो शैतान का औजार है, प्रचण्ड सम्मोहक और 'ईविल' है। कैथोलिक पोपों के पापों से और घरों के भीतर उसकी दखलन्दाजी से घबड़ा कर प्रोटेस्टेन्ट ईसाईयों ने 'पति परमेश्वर है' की धारणा रची, यह आज कितने लोग जानते हैं? ख्रीस्तपंथी यूरोप में सन् 1929 तक स्त्री को व्यक्ति नहीं माना जाता था, स्त्रियों को आँख के अलावा शेष समस्त देह को ख्रीस्तपंथ के आदेशों के अन्तर्गत ढँककर रखना अनिवार्य था और पति-पत्नी का भी समागम सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार एं रविवार के दिनों में वर्जित एवं दण्डनीय पाप घोषित था।

पोप इनोसेन्ट के जुलूस में आगे-आगे सैकड़ों निर्वसन स्त्रियाँ एवं दोगले बच्चे चलते थे, यह कितनों को पता है?

अविवाहित यानी 'सेलिबेट' पादरियों को वेश्या-कर देना अनिवार्य था और ख्रीस्तीय राज्य उन पादरियों के लिए लाइसेंसशुदा वेश्यालय चलाता था, विवाह एक धत्-कर्म था तता वेश्या होना विवाहित होने की तुलना में गौरमय था—ख्रीस्तपंथी पादरियों की व्यवस्था के अनुसार। ऐतिहासिक यथार्थ के इन महत्त्वपूर्ण पक्षों की प्रामाणिक प्रस्तुति करनेवाली यह पुस्तक विश्व की श्रेष्ठ 25 विश्व-सभ्यताओं में स्त्री की गरिमापूर्ण स्थिति की भी प्रामाणिक विवेचना करती है और हिन्दू स्त्रियों के समक्ष उस दायित्व को रखती है जो उन्हें वैश्विक मानवीय सन्दर्भों में शुभ, श्रेयसा एवं तेजस की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए निभाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में श्रेष्ठ विदुषी यूरोपीय स्त्रियों एवं विद्वान यूरोपीय पुरुषों के गहन अध्यवसाय से अर्जित ज्ञान के अंशों की प्रस्तुति कर विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में स्त्री की स्थिति के बारे में तथ्य दिए गये हैं। साथ ही, हिन्दू धर्म एवं हिन्दू इतिहास में स्त्रियों की स्थिति पर शास्त्रीय आधारों सहित प्रामाणिक जानकारी दी गई है।

मध्ययुगीन काव्य

सम्पादक
डॉ० सत्यनारायण सिंह

प्रथम संस्करण : 2009 ई०

पृष्ठ : 304

अजि. : रु० 60.00
ISBN : 978-81-7124-708-0
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी साहित्य के मध्ययुगीन कवियों की रचनाएँ—भाव, भाषा, काव्य-सौन्दर्य तथा काव्यशास्त्र की दृष्टि से हमारे साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इस युग में हिन्दी भाषा और संस्कृति संधिकालीन परिस्थिति से निकलकर अपने वास्तविक रूप में स्थापित हुई। ब्रज तथा अवधी जैसी जन-भाषाएँ साहित्य के सिंहासन पर आरूढ़ हुईं और महाकवियों के हाथों में पड़कर उनका पूर्ण विकास और परिष्करण हुआ, उन्हें प्रौढ़त्व प्राप्त हुआ। पूर्व मध्ययुग (भक्तिकाल) में कबीर, रैदास, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा, रसखान, केशव जैसे लोकप्रिय कवि हुए। इन कवियों ने स्निग्ध वाणी द्वारा जनता में भक्ति का संचार कर उनकी रक्षा की। हिन्दी जनता की मानसिक एवं आध्यात्मिक पिपासा शांत हुई। बीजक, पद्मावत, सूरसागर, रामचरितमानस, रामचन्द्रिका, कविप्रिया, रसप्रिया, मीरापदावली आदि प्रसिद्ध तथा उच्चकोटि की रचनाओं का निर्माण हुआ। उत्तर मध्ययुग (रीतिकाल) में रीतिग्रन्थों का प्रणयन हुआ। अनेक लक्षण-ग्रन्थ लिखे गए और रीतिकालीन श्रृंगारी कवियों ने भाव एवं भाषा का कलात्मक श्रृंगार कर उसकी अभिव्यंजना-शक्ति को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। रीति- युगीन कवियों में चिंतामणि, मतिराम, भूषण, देव, बिहारी, घनानंद, बोधा, आलम आदि प्रमुख हैं तथा रचनाओं में ललितललाम, बिहारी सतसई, जगद्विनोद, शिवराजभूषण, घनानंद कवित्त आदि सर्वोत्तम हैं। पद, दोहा, चौपाई, कवित्त-सवैया आदि अनेक शैलियों का जन्म मध्ययुग में ही हुआ। इसी युग में प्रबन्ध तथा मुक्तक काव्य लिखे गए। वास्तव में हिन्दी प्रदेश के वर्तमान मानसिक एवं आध्यात्मिक जीवन का गठन बहुत-कुछ इसी युग में हुआ। इसी समय हिन्दी साहित्य की चिन्तनधारा अत्यन्त उच्च भाव-भूमि पर स्थित हुई, जिसके द्वारा हिन्दी प्रदेश का स्वाभाविक जीवन मुखरित हो उठा। अत: हिन्दी साहित्य में मध्ययुग का विशेष महत्त्व है। 'मध्ययुगीन काव्य' मध्ययुगीन काव्य-प्रवृत्तियों से सम्बद्ध प्रतिनिधि कविताओं का संकलन है। इस संकलन में कबीर, रैदास, जायसी, सूर, तुलसी, बिहारी, घनानंद तथा भूषण की सरस एवं लोकप्रिय कविताओं का चयन किया गया है, जो अपनी विशिष्ट प्रवृत्तियों, भाव, भाषा एवं काव्य-रूपों की दृष्टि से अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। कवि-परिचय एवं उनके काव्य की संक्षिप्त समीक्षा के साथ उनकी चयनित कविताओं को प्रस्तुत करते हुए परिशिष्ट-एक में कठिन शब्दों एवं सन्दर्भों की व्याख्या दी गई है, ताकि विद्यार्थियों को काव्य-पाठ में कठिनाई का सामना न करना पड़े। परिशिष्ट-दो में शब्द-शक्ति, रस, प्रमुख छन्द एवं अलंकारों का सोदाहरण परिचय भी दिया गया है, जिससे काव्य-वैशिष्ट्य को पहचानने में सुविधा हो।

आगामी प्रकाशन

भाषिकी के प्रारंभिक सिद्धान्त
(Basic Principles of Linguistics)

डॉ० एच० परमेश्वरन
भूतपूर्व प्रिंसिपल, यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय संस्करण : 2010 ई० पृष्ठ : 88
ISBN : 978-81-7124-708-0 अजि. : रु० 30.00
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

विषय-सूची

1. भाषिकी : स्वरूप और अंग
2. ध्वनि-विज्ञान (स्वन-विज्ञान)— (1) स्वानिकी, (2) स्वानिमी
3. रूप-विज्ञान, 4. शब्द-विज्ञान,
5. वाक्य-विज्ञान, 6. अर्थ-विज्ञान
7. रूप-स्वनिमी, 8. लेखन-प्रणाली

दुष्यन्त कुमार : कुछ ग़ज़लें और मूल्यांकन

प्रो० वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

प्रथम संस्करण : 2010 ई० पृष्ठ : 36
ISBN : 978-81-7124-627-4 अजि. : रु० 20.00

मैं जिसे ओढ़ता-बिछाता हूँ,
वो ग़ज़ल आपको सुनाता हूँ।

ग़ज़ल ने अरबी से फ़ारसी और अमीर खुसरो से आजतक एक लम्बी यात्रा तै कर ली है, मगर उसे राजमहलों और कोठों की महफिलों से उतारकर और उसके घुँघरुओं को खोलकर उसे फुटपाथों, चौराहों और खेतों-खलिहानों तथा आम आदमी के होठों तक पहुँचाने में जिस शख़्स की सबसे बड़ी भूमिका थी, साहित्य-जगत उसे दुष्यन्त कुमार के नाम से जानता है। ग़ज़ल यदि ज़िन्दगी की धड़कनों से स्पन्दित और जीवन-जगत की हर समस्या से आँखें चार करती दिखाई पड़ रही है तो इसके पीछे दुष्यन्त कुमार का ही योगदान था।.

दुष्यन्त जनता के, विशेषकर नौजवानों के पसन्दीदा शायर हैं। कुछ विश्वविद्यालयों में उनकी ग़ज़लें पढ़ाई भी जाती हैं, किन्तु उनकी ग़ज़लें आसानी से उपलब्ध नहीं होतीं। कुछ शेर

शेष पृष्ठ 15 पर

राष्ट्रगौरव

सम्पादक
डॉ० मुकेशप्रताप सिंह
डॉ० साधना द्विवेदी
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

भारतीय संस्कृति के मूल स्त्रोत वेदादि शास्त्र हैं। अतएव लौकिक-पारलौकिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, उन्नति का वेदादि शास्त्रसम्मत मार्ग ही भारतीय संस्कृति है। दर्शन, भाषा, साहित्य, ज्ञान-विज्ञान, इतिहास, कला आदि संस्कृति के सभी अंगों पर वेदादिशास्त्र मूलक सिद्धान्तों की ही छाप है।

संस्कृति है मानव की जीवन-शक्ति, प्रगतिशील साधनाओं की विमल विभूति, राष्ट्रिय आदर्श की गौरवमयी मर्यादा और स्वतन्त्रता की वास्तविक प्रतिष्ठा। इस तथ्य का चिन्तन करते हुए भारतीय परम्परा ने सदा सांस्कृतिक निष्ठा के मंगलमय मार्ग को अपनाया। फलस्वरूप संस्कृति भारत भूमि के कण-कण में व्याप्त है, भारतीय साहित्य के पद-पद में ओत-प्रोत है और भारतीय इतिहास के प्रत्येक पृष्ठ पर अंकित है।

हमारी प्राचीन संस्कृति और परम्परा, हमारी भारतीय प्रतिभा और महापुरुषों के उपदेश जो स्वयं में इतनी बड़ी औषधि है कि उनके आदेशों के अनुसार चलने और उनकी देखभाल में रहने से निश्चय ही सामाजिक व्याधि पूरे तौर पर हट (समाप्त) जायेगी।

आधुनिक विचार और आधुनिक प्रगति के नाम पर हम लोगों ने बुद्धि और मन की गुलामी करने में जो अति कर दी है उससे हमने अपनी प्राचीन सांस्कृतिक सम्पत्ति को ठुकरा दिया है। इसी आलोक में राष्ट्र-गौरव पुस्तक को विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में स्नातक के छात्रों के लिए अनिवार्य बनाया गया क्योंकि संस्कृति चित्त भूमि की खेती है। राष्ट्र-गौरव पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन से चित्त भूमि की खेती का अनवरत विकास होगा और इससे भारतीय मन का निर्माण होगा और विद्यार्थी अपने व्यावहारिक जीवन में अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलीभूत होंगे।

इस पुस्तक को एक आयाम देने में सम्पादकद्वय ने विभिन्न पुस्तकों से मधुमक्खी की तरह से रस संचयन का जो गुरुतर दायित्व का निर्वहन किया है निश्चित रूप से बधाई के पात्र हैं। मेरा यह विश्वास है कि यह पुस्तक छात्रों के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ अपने लक्ष्य की प्राप्ति में उनको प्रेरणा प्रदान करेगी। इस महनीय कार्य हेतु डॉ० मुकेशप्रताप सिंह एवं डॉ० साधना द्विवेदी को साधुवाद देता हूँ कि भविष्य में भी अनवरत गति से अपने लेखन को आगे बढ़ाते रहेंगे।

—प्रो० परमानन्द सिंह, अध्यक्ष, भूगोल विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना

लेखक
डॉ० रामचन्द्र तिवारी
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

यह कृति विश्वविद्यालयों के उच्च कक्षा के छात्रों को दृष्टि में रखकर लिखी गई है। इसमें तीन खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में भारतीय काव्यशास्त्र की रूप-रेखा प्रस्तुत की गई है। दूसरे खण्ड में पाश्चात्य काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय दिया गया है। इस क्रम में उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को भी प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है जिसमें आलोचना की विशिष्ट प्रवृत्ति या आलोचक-विशेष के व्यक्तित्व का विकास हुआ है। तीसरे खण्ड में हिन्दी-आलोचना के विकास को संक्षेप में प्रस्तुत करने के बाद प्रमुख आलोचकों के आलोचक-व्यक्तित्व का विश्लेषण किया गया है। वस्तुत: हिन्दी-आलोचना का विकास भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-शास्त्र के संश्लेष से हुआ है। संश्लेषण की प्रक्रिया भारतेन्दु-युग में ही आरम्भ हो गई थी, आगे चलकर यह हिन्दी आलोचना की नियति बन गई। प्लेटो, अरस्तू, होरेस, लोंगिनुस, कोलरिज, जानसन, मैथ्यू आर्नल्ड, क्रोचे रिचर्डस, इलियट आदि की चर्चा किए बिना हिन्दी-आलोचना अधूरी समझी जाने लगी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अवश्य यह चाहा था कि भारतीय काव्य-शास्त्र को महत्त्व देते हुए उसके आलोक में पाश्चात्य काव्य-चिन्तन को देखा-परखा जाय। उनके बाद डॉ० नगेन्द्र ने इस कार्य को आगे बढ़ाने की कोशिश की किन्तु यह सम्भव नहीं हुआ और हुआ यह कि भारतीय-काव्य-चिन्तन अप्रासंगिक घोषित कर दिया गया और अब स्थिति यह है कि हिन्दी-आलोचना, पाश्चात्य-आलोचना (मुख्यत: अमेरिकी आलोचना) की अनुगामिनी बनकर रह गई है। आज हिन्दी का विद्यार्थी बिम्ब, प्रतीक, रूपवाद, अनुभूति की प्रामाणिकता, द्वन्द्व, तनाव, विसंगति, विडम्बना, फैंटेसी, मिथक, शैली-विज्ञान, संरचनावाद, आधुनिकतावाद, यथार्थवाद, विचारधारा, संस्कृतिवाद, बहुलतावाद, परम्परावाद आदि अनेक पारिभाषिक शब्दों से आतंकित है। अब विरेचन-सिद्धान्त और रसवाद, वक्रोक्ति और अभिव्यंजना, निर्वैयक्तिकता और साधारणीकरण, वस्तुनिष्ठ समीकरण और विभावन-व्यापार, स्वच्छन्दतावाद और छायावाद आदि की तुलना इतिहास की वस्तु बन गई है। प्रस्तुत कृति में काव्य-सिद्धान्तों और पारिभाषिक शब्दों को उनके मूल सन्दर्भ के साथ स्पष्ट करने की कोशिश की गई है। प्रयत्न किया गया है कि छात्रों के मन से सिद्धान्तों और वादों का आतंक दूर हो जाय।

स्मृति-शेष

मूर्धन्य पत्रकार प्रभाष जोशी का निधन

हिन्दी पत्रकारिता के यशस्वी हस्ताक्षर **प्रभाष जोशी** का 5 नवम्बर 2009 को देर रात दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे। उनके शोक संतप्त परिवार में पत्नी, दो पुत्र, एक पुत्री और नाती-पोते हैं। प्रभाष जोशी दैनिक जनसत्ता के संस्थापक सम्पादक थे।

मूल रूप से इन्दौर निवासी प्रभाष जोशी ने 'नई दुनिया' से पत्रकारिता की शुरुआत की थी। मूर्धन्य पत्रकार राजेन्द्र माथुर और शरद जोशी उनके समकालीन थे। 'नई दुनिया' के बाद वे इण्डियन एक्सप्रेस से जुड़े और उन्होंने चण्डीगढ़ तथा अहमदाबाद में स्थानीय सम्पादक का पद सँभाला। 1983 में दैनिक जनसत्ता का प्रकाशन शुरू हुआ जिसने हिन्दी पत्रकारिता की दिशा और दशा बदल दी। 1995 में इस दैनिक के सम्पादक पद से सेवानिवृत्त होने के बावजूद वे एक दशक से ज्यादा समय तक बतौर सम्पादकीय सलाहकार इस पत्र से जुड़े रहे। प्रभाष जोशी अपने साप्ताहिक स्तंभ 'कागद कारे' के साथ विभिन्न विषयों पर निरन्तर लिखते रहे। सामाजिक, राजनीतिक सरोकारों के साथ ही खेल, खासकर क्रिकेट पर उन्होंने यादगार लेखन किया और 5 नवम्बर को वसुन्धरा स्थित अपने जनसत्ता अपार्टमेंट स्थित आवास पर दिल का दौरा पड़ने से पहले उन्होंने भारत और आस्ट्रेलिया के बीच हुआ पाँचवां एक दिवसीय मैच देखा था।

कमला सांकृत्यायन का निधन

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की पत्नी **कमला** का रविवार 25 अक्टूबर 2009 को निधन हो गया। उनकी पुत्री जया पड़हाक ने बताया कि वे 16 अक्टूबर को पुत्र जेता के साथ दार्जिलिंग घूमने निकली थीं कि दिल का दौरा पड़ा। उन्हें पैरामाउंट हॉस्पिटल सिलीगुड़ी लाया गया जहाँ रविवार को दिन के 11.30 बजे उनका निधन हो गया। सोमवार 26 अक्टूबर की शाम को दार्जिलिंग में राहुलजी की समाधि के पास उनका दाह-संस्कार किया गया। वह लगभग 79 साल की थीं।

नहीं रहे गुणाकर मुले

प्रख्यात विज्ञान लेखक **गुणाकर मुले** का दिल्ली में 16 अक्टूबर को पांडव नगर स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। वह 74 वर्ष के थे। उनकी मातृ भाषा मराठी थी लेकिन वह लेखन हिन्दी और अंग्रेजी में करते थे। वह सन् 1960 से विज्ञान तकनीक, पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र, पुरालिपिशास्त्र, भारतीय इतिहास और संस्कृति से जुड़े विषयों पर लिखते आ रहे थे। उनकी करीब 35 से अधिक मौलिक पुस्तकें और 3000 से अधिक लेख हिन्दी में तथा 250 लेख अंग्रेजी में प्रकाशित हो चुके हैं। गुणाकर मुले को उनके लेखन के लिए हिन्दी अकादमी के साहित्यकार सम्मान से लेकर राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

डॉ० हरिश्चंद्र मणि त्रिपाठी का निधन

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में प्रकाशन संस्थान के निदेशक **डॉ० हरिश्चंद्रमणि त्रिपाठी** का बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के सरसुन्दरलाल अस्पताल में निधन हो गया। वे 61 वर्ष के थे। वहदेवरिया के मूल निवासी थे। डॉ० त्रिपाठी 1975 में प्रकाशन अधिकारी बने थे। वे व्याकरण शास्त्र के अच्छे जानकार थे। उन्होंने लगभग एक दर्जन पुस्तकों का सम्पादन और लेखन किया था।

नवगीतकार उमाशंकर तिवारी नहीं रहे

प्रख्यात नवगीतकार डॉ० उमाशंकर तिवारी का 28 अक्टूबर को हृदय गति रुकने से निधन हो गया। वे 69 वर्ष के थे।

इनका पहला संकलन 'जलते शहर' और दूसरा 'धूप कड़ी है' (1968) में आया। उसके लगभग तीन दशक के अंतराल पर 'तोहफे काँच घर के' (1996) देखने को मिला वह ठेठ हिन्दी के जातीय गीतकार थे और रोमांटिक होने के साथ सरोकार से भी कटे नहीं। गुजरात दंगा हुआ तो कहते हैं 'वो न हिन्दू था न मुस्लिम था कोई / आदमी मारे गए गुजरात में'।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने 'निराला सम्मान' और 'साहित्य भूषण' देकर उनके प्रति आभार जताया। पर इन सबसे बेपरवाह वह लगातार लगे रहे इस ऐलान के साथ कि 'हम न रुकेंगे गलियारों में / हम न बिकेंगे बाजारों में / बाकी ईमान अभी भी।'

कवि-गीतकार हरीश भादानी नहीं रहे

2 अक्टूबर को राजस्थान के जनकवि कहे जाने वाले 76 वर्षीय **श्री हरीश भदानी** का निधन हो गया। उनकी रचनाएँ दो दर्जन से ज्यादा काव्य-संकलनों में संकलित हैं। उन्होंने मजदूर-किसानों के जीवन से लेकर प्रकृति और वेदों की ऋचाओं पर कविताएँ लिखीं। साठ के दशक में उन्होंने 'वातायन' मासिक प्रारम्भ किया तथा त्रैमासिक 'कलम' के सम्पादक मण्डल में भी रहे। उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें राजस्थान साहित्य अकादेमी का 'मीरा पुरस्कार' और के०के० बिड़ला फाउण्डेशन का 'बिहारी सम्मान' प्रमुख हैं।

पृष्ठ 14 का शेष

हैं जो लोगों की ज़बान पर रहते हैं। इस पुस्तिका में दुष्यन्त कुमार की कुछ ग़ज़लें एक लेख के साथ विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन हेतु प्रकाशित की जा रही हैं।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' अंक 9-10, सितम्बर-अक्टूबर 2009 में प्रकाशित, प्रो० राजेन्द्र मिश्र, पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के 'शासन द्वारा साहित्यकारों की उपेक्षा' नामक शीर्षक में अभिव्यक्त विचार राष्ट्रचिंतकों में समय रहते चेतना फूँकने वाले हैं। शासन पूरी तरह धृतराष्ट्र की भूमिका का निर्वाह कर रहा है। उसे वे असंख्य श्रेष्ठ साहित्यकार, कवि, चिन्तक, समाजसेवक और राष्ट्रभक्त दिखाई नहीं पड़ते, जो संसद में पहुँचकर राष्ट्राभ्युदय में महान योगदान देकर भारतवर्ष को एक अभिनव दिशा प्रदान कर सकते हैं। मिश्रजी के विचार वास्तव में समसामयिक हैं और आज की एक विशेष समस्या को सशक्त ढंग से रेखांकित करते हैं।

—डॉ० ओमप्रकाश राजपाली
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बाह (मध्य प्रदेश)

पुस्तक-समीक्षाओं एवं उपयोगी लेखों से सुसज्जित 'भारतीय वाङ्मय' सतरंगी आभा से हमेशा दमकती रहती है।

स्तरीय व कुशल सम्पादन पाठकों को नवीन, तर्कसंगत तथा तथ्यपूर्ण आयामों से रूबरू करवाता है। **—दिवाकर गोयल**
महाप्रबन्धक (कार्मिक एवं प्रशासन), चेन्नै एयरपोर्ट

सितम्बर-अक्टूबर अंक में 'सर्वेक्षण' में आपके विचारों से मैं पूर्ण सहमत हूँ। आठवीं अनुसूची का विस्तार राजनीति से प्रेरित है और इसे व्यवहार में सम्भालना सम्भव न होगा। हिन्दी को राजभाषा बनाकर उसके महत्त्व को कमतर किया गया है। हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' घोषित किया जाना चाहिए। आखिर भारत राष्ट्र की राष्ट्रभाषा कौन है ? सभी हमारी भाषाएँ भारत की राष्ट्रीय भाषाएँ हैं, पर इनमें एक राष्ट्रभाषा होनी चाहिए। हिन्दी अधिकारिणी है।

यत्र-तत्र-सर्वत्र तथा संगोष्ठी/लोकार्पण हिन्दी जगत के इतने समाचार एक स्थान पर पढ़ने को मिल जाते हैं।

—डॉ० सन्तकुमार टण्डन 'रसिक'
इलाहाबाद

दुष्यंत कुमार स्मारक डाक टिकट का विमोचन

27 सितम्बर को माधवराव सप्रे समाचार-पत्र संग्रहालय, भोपाल के तत्त्वावधान में आयोजित समारोह में मध्य-प्रदेश के राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुर ने भारतीय डाक विभाग द्वारा हिन्दी के यशस्वी ग़ज़लकार स्व० दुष्यंत कुमार के सम्मान में जारी 'दुष्यंत कुमार स्मारक डाक टिकट' का विमोचन किया।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

लोअर परेल (कविताएँ), कवि : हूबनाथ, अनिमेष प्रकाशन, 7/177, शिवनेरी बिल्डिंग, शबरी होटल के पास, सायन माटुंगा रोड, सायन (प०) मुंबई-400022, प्रथम संस्करण 2009, मूल्य : रु० 125/- मात्र

× × बिना किसी भूमिका के सीधे कविताएँ सम्बोधित करती हैं और बिना किसी अर्थापन के स्वयं सम्प्रेषित होती जाती हैं, अपनी इसी खूबी के साथ कवि और कविताएँ पाठक के जेहन में जगह बना लेते हैं। मुंबई नगर का महानगरीय ढाँचा पिछले तीन-चार दशकों में जितना बदला है उसे गहराई से महसूस करते हुए उपजी ये कविताएँ अपने अतीत और वर्तमान के बिम्ब सहेजते हुए अभिव्यक्त होती हैं। × × ''और ट्रेन चल देगी / पर नहीं खिलेगी मुस्कान / उन अभागे चेहरों पर / जिन पर गिरी थी बिजली ग्यारह जुलाई को / जिस्म के किसी हिस्से का मर जाना / पूरे जिस्म को अपाहिज बना जाता है।''

सामाजिक चेतना, अशोक गिरि, हिमाद्रि प्रकाशन, साहित्यांचल कोटद्वार, गढ़वाल, उत्तराखण्ड, मूल्य : रु० 50/- मात्र

× × साधारण दिखने के बावजूद कविताओं से गुज़रते हुए प्रतीत होता है कि कथ्य में दम है। कवि ने अपने आस-पास के यथार्थ की संवेदना को व्यक्त करने की कोशिश की है— ''छह बजे वो बेचता अखबार / आठ बजे वो बन जाता छात्र / शाम को चौराहे पर लगाता चाट की ठेली / रात भर बनाता बचे अखबारों की थैली / क्योंकि! बाप है उसका लाचार और माँ है बीमार / बहन घर में जवान और अपनों से दुत्कार।'' × ×

सन्नाटे ढोते गलियारे (गीत-नवगीत संग्रह), शैलेन्द्र शर्मा, मानसरोवर प्रकाशन, 248/12, शास्त्रीनगर, कानपुर-208005, प्रथम संस्करण : 2009, मूल्य : रु० 150/- मात्र

× × समकालीन कविता विमर्श के बीच हिन्दी के गीत-काव्य अपनी जगह बनाते जा रहे हैं, उसी क्रम में एक नये आयाम की तलाश है शैलेन्द्र शर्मा का गीत-नवगीत संग्रह 'सन्नाटे ढोते गलियारे'। × × ''तपी धरा से उठे बगूले / दिशाहीन होकर मरुथल में / कोई हिरन राह ज्यों भूले / सन्नाटे ढोते गलियारे / ऐसी प्रखर धूप की बाती / जिसकी ज्वाला सहते-सहते / दरक उठी ताल की छाती / धरती लहू-लुहान हुई है / कुछ कहते पलाश हैं फूले'' × ×

नयनदीप (कहानी संग्रह), शांति अग्रवाल, कादम्बिनी क्लब, हैदराबाद, 93/सी राजसदन, वेंगलराव नगर, हैदराबाद-500038, प्रथम संस्करण, मूल्य : रु० 100/- मात्र

× × इस संग्रह की कहानियाँ प्राय: विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं, जिन्हें सहृदय पाठकों की अनुशंसा भी मिली है। लेखिका शांति अग्रवाल ने पारिवारिक नारी-जीवन और उसके आस-पास की सामाजिक विसंगतियों और संघर्ष को बखूबी उभारा है, ये विषय उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति में मर्यादित भी हैं और मुखर क्रान्तिधर्मी भी।

अपनी माटी अपने गीत (भोजपुरी गीत संग्रह), डॉ० रामअवतार पाण्डेय, रचना प्रकाशन, श्री रामभवन, के० 54/30 बी, दारानगर, वाराणसी-221001, प्रथम संस्करण 2008, मूल्य : रु० 150/- मात्र

× × ''सन् 1879 की 'कविवचन सुधा' में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का एक वक्तव्य छपा था जिसमें 'ग्राम गीतों की छोटी-छोटी पुस्तकें बनाने और उनका साधारण लोगों में प्रचार करने' की प्रेरणा थी। इसी प्रेरणा के तहत लोकभाषा-कवियों ने समर्थ रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। उसी क्रम में प्रस्तुत है डॉ० रामअवतार शर्मा की कृति 'अपनी माटी अपने गीत'। राष्ट्र भावना को व्यक्त करती ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं— ''आवा आवा बहिनी तू आवा, ए देश के सजावा ना हो / बहिनी देसवा कऽ मटिया पियारी हमार महतारी ना हो''।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 **नवम्बर 09** **अंक : 11**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)